Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-26
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 20 सितम्बर से 26 सितम्बर 2017 तक
आश्विन कृष्ण अमावस्या से आश्विन शुक्ल षष्ठी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

योग्यता या संतुष्टिकरण.. पृष्ठ- 3

तिमला फल में मिला.. पृष्ठ- 4

श्राद्ध करते समय ध्यान... पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तित्व और... पृष्ठ- 8

कीड़े मकोड़े की तरह.... पृष्ठ- 12

- शिक्षा में भी भेदभाव क्यों
- ईसाई धर्मान्तरण का एक कुत्सित तरीका–प्रार्थना से चंगाई
- सैनिक का थाल या गम्भीर सवाल?
- बेटिया दुनियां की आधी आबादी समस्या और सोच
- मुस्लिम महिलाओं का शंखनाद

अमेरिका की सर्वश्रेष्ठ नेताओं की सूची में ५ भारतीय

भारतवंशयियों ने पूरे विश्व में डंका बजाया–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अमेरिका की राजनीति में अपना उल्लेखनीय योगदान देने वाले शीर्ष ५० नेताओं की २०१७ की सूची तैयार की गई है। इस सूची में पांच भारतीय–अमेरिकियों का नाम भी शुमार है। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की राजदूत निक्की हेली के अलावा इस सूची में ट्रंप प्रशासन में शीर्ष स्वास्थ्य सेवा एजेंसी की प्रमुख सीमा वर्मा, वकील नील कत्याल, अर्थशास्त्री अर्पणा माथुर और वकील नियोमी राव का नाम भी शामिल है। मैगजीन की एक रिपोर्ट शेष पृष्ठ 11 पर

और मजबूत हुए रिश्ते

रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजा जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

भारत ने अपनी एक्ट ईस्ट नीति पर जोर देते हुए म्यांमार के साथ ६ सितंबर को ११ समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इनमें समुद्री सुरक्षा सहयोग संबंधित समझौते भी शामिल हैं। इसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और म्यांमार की स्टेट काउंसिलर आंग सान सू की के बीच प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई। समुद्री सुरक्षा सहयोग और व्हाइट शिपिंग इंफार्मेशन साझा करने से संबंधित दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। तटीय निगरानी प्रणाली के लिए एक तकनीकी समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए। भारत के चुनाव आयोग और म्यांमार के केंद्रीय चुनाव के बीच एक और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। सू की की अध्यक्षता वाली नेशनल लीग ऑफ डेमोक्रेसी ने म्यांमार के २०१५ के आम चुनाव में भारी बहुमत से जीत दर्ज कर ५४ साल बाद नागरिक सरकार बनाई थी। भारत और म्यांमार ने साल २०१७ से २०२० तक के लिए सांस्तिक आदान–प्रदान के कार्यक्रम पर भी हस्ताक्षर किए। भारतीय प्रेस परिषद और म्यांमार प्रेस परिषद के बीच भी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इंडिया–म्यांमार सेंटर फ र एनहेंसमेंट ऑफ आईटी स्किल और म्यांमार इंस्टीट्यूट ऑफ इंफार्मेशन टेक्नालॉजी एमआईआईटी की स्थापना पर हुए दो समझौता ज्ञापनों की मियाद बढ़ाई गई। स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में और चिकित्सा उत्पादों पर दो अन्य एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। यामेथिन में महिला पुलिस प्रशिक्षण केंद्र के उन्नयन के लिए सहयोग बढ़ाने पर किए एक अन्य शेष पृष्ठ 11 पर

आध्यात्मिक यात्रा का शुभारंभ है हिन्दू विवाह

विवाह एक सांसारिक अव्यवस्था को दूर करने वाला संस्कार है। इसी से पुरुष सुसंस्कृत, सभ्य एवं धर्मात्मा बनता है। पुरुष की अपने शरीर में जितनी ममता होती है, उतनी अन्य वस्तुओं में नहीं। विवाह के द्वारा उसकी ममता अपने शरीर से ऊपर उठकर पत्नी में और फिर पत्नी के संबंधियों में बंट जाती है। फिर संतान होने पर वही ममता पुत्र–कन्या आदि में बंट जाती है। वही प्रेम घर की चारदीवारी से प्रारंभ होकर मुहल्ला, गली, ग्राम, नगर, प्रान्त, देश और फिर क्रमशः समस्त विश्व में व्याप्त हो जाता है। गृहस्थ में पति–पत्नी को एक–दूसरे के हित के लिए अपने स्वार्थ का बलिदान, प्रतिकूल व्यवहार में सहिष्णुता और क्षमा, अत्यन्त कष्ट में भी धैर्य आदि गुणों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। यही प्रेम विकसित होकर मनुष्य को सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है। गृहस्थ के इस महाविद्यालय में त्याग–प्रेम आदि का पूर्ण अभ्यास कर जब पति–पत्नी उसी प्रेमभाव–त्यागभाव का प्रयोग परमेश्वर की दिशा की ओर प्रवृत्त कर देते हैं, तब वे परमेश्वर के अत्येंत निकट पहुँच जाते हैं। यही शास्त्रानुसार उनके जीवन का परम एवं चरम लक्ष्य हुआ करता है।

हिन्दू–विवाह का परम लक्ष्य कामवासना–पूर्ति नहीं है, किन्तु यज्ञ में अधिकार–प्राप्ति तथा सात्त्विक प्रेम में प्रवृत्ति और वेदादि शास्त्र में प्रेम उत्पन्न करना है। वेदमंत्रों से विवाह शरीर और मन पर विशिष्ट संस्कार उत्पन्न करने वाला होता है। इससे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षतक की प्राप्ति हुआ करती है। विवाह में हाने वाली चार परिक्रमाएँ इन्हीं चारों वर्गों को संकेतित करती हैं। इसमें काम अवान्तर वस्तु है। इसमें संतान उत्पन्न करना, पितृ–ऋण का पूर्तिकर्ता और पितरों का उद्धारकर्ता माना जाता है। अतः उसमें ऋतुगमन के अतिरिक्त काम वर्जित रखा गया है। इसमें स्त्रि वागमणय में अधिकार पाकर पुरुष की हृदय रूपा बन जाती है। यदि विवाह–संस्कार न होता तो पुरुष की न तो पत्नी ही होती, न माँ, न बहन और न उसकी कोई लड़की आदि संतान ही होती। विवाह–बंधन के अभाव में पुरुष अपनी वासना पूर्ण करने के लिए पशुओं की तरह स्त्रीमात्र के पीछे लगा रहता, छीना–झपटी करता, लड़ता, झगड़ता, अपनी बुद्धि को दूसरे के विनाश में लगाता और क्रोध के साम्राज्य को व्यापक बनाता। उससे उत्पन्न अवैध संतानों की कोई रक्षा न करता, वे गली–गली ठोकरें खाती फिरती। न तब पुरुष का घर होता और न कोई विद्यालय होता। विवाहरहित राष्ट्र, धर्म, शिक्षा, संस्कृति, कला, विज्ञान आदि से सर्वथा शून्य एक पशु–राष्ट्र होता। इसी विवाह–संस्कार ने मनुष्य को व्यवस्थित किया, परिवार दिया, प्रेम दिया, घर बसाने की और विद्या पाने की प्रेरणा दी। विवाह से ही यह सुवर्णमय संसार बस पाया। हिन्दू–विवाह में स्त्री केवल काम पूर्ति का यंत्र नहीं बनती, किन्तु धर्मपत्नी बनती है। इसी के द्वारा स्त्री में पतिव्रत्य इतना कूटकर भर दिया जाता है कि वह अपने पति से अतिरिक्त पुरुषों को पिता, भ्राता या पुत्र की दृष्टि से देंखती है। दूसरे जन्म में भी वह स्त्री अपने पतिलोक की कामना में निरत रहती है। जल से जल के मेल की तरह वह पति से अभिन्न हो जाती है। तब इसमें दुश्चरित्रता से स्वप्रेम भी नहीं रह पाती। विवाह के विच्छेद का तो इसमें विचार ही नहीं रह पाता। इसी हिन्दू–विवाह के परिणामस्वरूप भारतवर्ष का पातिव्रत्यधर्म देश–विदेश में सुप्रसिद्ध है। इसमें पति–पत्नी एक द्वार के दो किवाड़ हैं, एक मुख की दो आँखें हैं, एक रथ के दो चक्र हैं। इसी हिन्दू विवाह से दम्पती एक दूसरे से अविश्वस्त नहीं रहते, पक्का गठजोड़ रहता है। इस हिन्दू–विवाह विविध में देवताओं की साक्षी होती है। इस संस्कार की एक–एक विधि में ऐसे ही भाव गर्भित होते हैं। अश्मारोह, ध्रुवदर्शन, लाजाहोम आदि विधियाँ, 'मम व्रते ते हृदयं दधामि, मम वित्तमनुचित्तंतेऽस्तु' इत्यादि तथा 'प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि, अस्थिभिस्ते अस्थीनि संदधामि, मांसैस्ते मांसानि संदधामि, त्वचा ते त्वचं संदधार्मि' आदि मंत्र इस संबंध सूत्र को और सुदृढ़ करते हैं। इससे हिन्दू विवाह अन्य जातियों के विवाह से बहुत सी विशेषताएँ रखता है। यह भिन्न सम्प्रदायवालों को भी स्वतः मानना पड़ता है।

पं. श्री दीनानाथ जी शर्मा शास्त्री

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों को घरेलू मामलों में सुखद वातावरण बना रहेगा जिससे मन प्रसन्न रहेगा। अपने समय का सदउपयोग करें न कि उसे व्यर्थ में गँवायें। विद्यार्थी वर्ग इस समय सावधानी बरते। जो लोग नये कार्यो से जुड़ना चाहते है, उन लोगों के लिए समय ठीक है।

वृष : इस सप्ताह जो लोग मकान या वाहन आदि के लिए प्रयासरत है उनके कार्यो में बाधायें आयेंगी। अनजाने लोगों से सम्बन्ध बनाने में सावधानी बरतें। नौकरी वाले जातक अपनी उपयोगिता बनायें रखें क्योंकि आपके कार्यो में पल–पल चुनौतियां नजर आ रही है।

मिथुन : इस सप्ताह आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी, जितनी आप अपेक्षा करेंगे। किसी महिला के कारण खर्च बढेघा। इस समय इन लोगों को बड़ो की सलाह पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोगों का भाग्य उनका पूरा साथ देगा तथा लम्बी यात्रओं का भी योग बनेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है। जो लोग किसी परीक्षा में बैठेगें उनके लिए यह समय बहुत ही अच्छा है। राजकीय अधिकारियों से अत्यधिक मेल–जोल लाभप्रद साबित होगा।

सिंह : इस सप्ताह समय के अनुकूल कार्य करने की जरूरत है अन्यथा हानि की आशंका नजर आ रही है। परिवार में बड़े बुजुर्गो तू–तू, मैं–मै हो सकती है। किसी के बहकावे में न आयें स्वंय अपने विवेक से कार्य करें तो बेहतर रहेगा।

कन्या : इस सप्ताह नौकरी पेशा करने वाले लोग अपने बास तर्क–कुर्तक न करें। भौतिक संसाधनों पर अत्यधिक व्यय रहेगा जिससे आपस में तनाव की स्थिति बनी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। व्यवसायी वर्ग के लिए यह समय अच्छा साबित होगा।

तुला : कुछ लोगों के वैवाहिक जीवन में तीखी–मीठी नोंक–झोंक हो सकती है। आपके किसी भी कार्य में धीमी प्रगति होगी। इस समय आपके शत्रुओं की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी और आप पर हावीं होने का प्रयास करेंगे। यह समय आपके लिए मिला जुला फल देगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह विद्यार्थियों को शिक्षा के अवसर तथा नौकरी व व्यवसाय करने वालों के लिए प्रगति होगी। कुछ लोगों को सन्तान की ओर से तनाव रहेगा। रोजी व रोजगार में वृद्धि होने के आसार नजर आ रहें है। परिवार तथा आपसी लोगों के मध्य तनाव बढेगा।

धनु : इस सप्ताह आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्य को बड़ी आसानी से कर लेंगे। जीवन साथी से अच्छे सम्बन्धों को बनाने के लिए त्याग करना पड़ता है। आपके घर में किसी धार्मिक कार्य का आयोजन होगा।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों के कार्यक्षेत्र में बदलाव आ सकता है। मित्रों से लाभ होने की सम्भावना है। कुछ लोगों को दाम्पत्य जीवन में बंधने के भी अवसर प्राप्त होगे। बच्चों को धारदार हथियारों से दूर रखें। जो लोग कर्ज या ब्याज आदि में फंसे है।

कुम्भ : कुछ लोगों के जीवन में परिवार का साथ व सहयोग बना रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह सप्ताह उत्तम रहेगा। अपने लोगों से सहयोग मिलने के आसार है। कुछ लोगों को नींद न आने के कारण मन में अवसाद की स्थिति आ सकती है।

मीन : इस समय विवाहित लोगों को अपने जीवन साथी के साथ घूमने–फिरने का अवसर प्राप्त होगा। आप जो कुछ भी करेगे इस समय आपको लाभ ही लाभ होगा। सर्दी से सम्बन्धित रोगों से सावधान रहना होगा। किसी नये कार्य को शुरू न करें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।।

श्री भगवान् बोले–मुझ में मन को एकाग्र करके निरन्तर मेरे भजन –ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त होकर मुझ सगुणरूप परमेश्वर को भजते हैं, वे मुझ को योगियों में अति उत्तम योगी मान्य हैं।।२।।

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम्।।
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतेहिते रतः।।

परन्तु जो पुरुष इन्द्रियो के समुदाय को भली प्रकार वश में करके मन–बुद्धि से परे, सर्वव्यापी, अकथनीस्वरूप और सदा एकरस रहने वाले, नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी, सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को निरन्तर एकीभाव से ध्यान करते हुए भजते हैं, वे सम्पूर्ण भूतों के रत और सबमें समान भाव वाले योगी मुझ को ही प्राप्त होते हैं।।३–४।।

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते।।

उन सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म में आसक्त चित्तवाले पुरुषों के साधन में परिश्रम विशेष हैः क्योंकि देहाभिमानियों के द्वारा अव्यक्तविषयक गति दुःखपूर्वक प्राप्त की जाती है।।५।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 20 सितम्बर से 26 सितम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

शिक्षा में भी भेदभाव क्यों

शिक्षा प्राप्त करना तो सबका अधिकार है और होना भी चाहिए। हम बाते तो बड़ी बड़ी करते हैं, लेकिन वह केवल हमारी बातों तक ही सीमित रहती हैं, हमारे जीवन से कोसों दूर। ५ सितम्बर को देश में एक बार फिर शिक्षक दिवस का जश्न मनाया गया। स्कूलों, कालेजों, सभाओं में गुरु की महिमा का बखान हुआ और कुछ शिक्षकों को सम्मानित भी किया गया। इस दौरान रस्मी तौर पर देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ० एस राधाकृष्णन की तस्वीर पर फूल माला भी अर्पित किया गया। लेकिन क्या इससे डॉ० एस राधाकृष्णन के विचारों का सम्मान और उसका प्रचार–प्रसार होगा। डॉ० एस राधाकृष्णन के जन्मदिवस को ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि उनका पूरा जीवन शिक्षण और शिक्षा को समर्पित था। उनका मानना था कि शिक्षा से ही मानव समाज में बराबरी आ सकती है। किंतु डॉ० एस राधाकृष्णन के ही गृह प्रदेश तमिलनाडु में जब एक मजदूर की बेटी डाक्टर बनने का सपना अधूरा रह जाने पर आत्महत्या को मजबूर होती है, तो यह सवाल और प्रासंगिक हो जाता है कि क्या वाकई हमने शिक्षा को समाज में बराबरी कायम करने का जरिया बनाया है या मौजूदा दौर की शिक्षा गैरबराबरी को और बढ़ा रही है। १७ साल की एसअनिता बेहद गरीब परिवार से थी और बहुत मेधावी थी। १२वीं में उसने १२०० में से ११७६ अंक हासिल किए थे। मेडिकल के लिए १९६.७५ और इंजीनियरिंग के लिए १९६. ७५ अंक हासिल कर अपने सुनहरे भविष्य के लिए दरवाजे खोल दिए थे। अनीता को मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी में एयरोन टिकल इंजीनियरिंग कोर्स में दाखिला मिल रहा था लेकिन उसकी जिद डाक्टर बनने की थी और शायद यही उसने न केवल अपने भविष्य के, बल्कि जीवन के दरवाजे भी बंद कर दिए। अनीता ने इस बात पर गौर नहीं फरमाया कि इस देश में गरीब होना और अच्छी पढाई का ख्वाब पालना किसी गुनाह के जैसा है। अगर राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा नीट की अनिवार्यता न होती तो अनीता और उस जैसे हजारों बच्चों को मेडिकल में प्रवेश लेना आसान होता, क्योंकि अब तक राज्यों की मेडिकल प्रवेश परीक्षा और आल इंडिया प्री मेडिकल टेस्ट के आधार पर राज्यों के मेडिकल कालेजों में दाखिला मिलता था। इसमें राज्य बोर्ड की पढ़ाई और उस मुताबिक तैयारी पर्याप्त होती थी। लेकिन २०१६ से नीट की अनिवार्यता के कारण छात्रों को सीबीएसई के पाठ्यक्रम के मुताबिक तैयारी करने का दबाव बढ़ गया। तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश आदि कई राज्यों से नीट के विरोध में आवाजें उठ रही थीं। देश में अब तक मेडिकल में दाखिले के लिए अलग–अलग ६० किस्म की परीक्षाएं होती थीं। इसमें थोड़ी गड़बड़ी भी होती थी, जिसे सुधारा जा सकता था। लेकिन उन गड़बड़ियों को सुधारने की जगह सभी किस्म के भेदभाव दूर करने के नाम पर नीट को एक अध्यादेश लाकर लागू कर दिया गया। हिंदुस्तान जैसे बड़े देश में जहां विभिन्न विविधताओं के साथ पढ़ाई भी विविध किस्मों और स्तरों की है, वहां एकदम से एकरूपता का आदेश थोपना घातकथा और अनीता की मौत से यह साबित भी हो गया है। होनहार अनीता सीबीएसई पाठयक्रम आधारित नीट की परीक्षा में ७०० में मात्र ८० अंक ला पाई थी। बिना महंगी कोचिंग या टयूशन के नीट जैसी परीक्षा में उत्तीर्ण होना गरीब छात्रों के लिए दिवास्वप्न ही है। अनीता ने नीट के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इससे पहले केंद्र सरकार ने तमिलनाडु को एक साल के लिए नीट से बाहर रहने का प्रस्ताव दिया था। और राज्य सरकार ने एक अध्यादेश पारित कर इस परीक्षा से खुद को बाहर कर लिया था। लेकिन फिर केंद्र अपने फैसले से पलट गया। अटार्नी जनरल केके वेणुगोपाल ने राज्य को बताया था कि उसका अध्यादेश कानूनी रूप से वैध नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट ने भी राज्य सरकार को आदेश दिए थे कि वह नीट रैकिंग के मुताबिक ही चले। केंद्र का रूख बदलने के बाद तमिलनाडु के हजारों छात्रों की उम्मीदों पर पानी फिर गया था। क्योंकि नीट से बाहर होने के बाद राज्य में मेडिकल क लेज में प्रवेश स्टेट बोर्ड के परिणाम पर होते। इस घटनाक्रम से हताश अनीता ने आत्महत्या का कदम उठा लिया। इस दुखद प्रसंग ने हमारी शिक्षा व्यवस्था और उसमें हो रहे अविचारित प्रयोगों पर सवाल खड़े किए हैं, जिनका सामना करने की राजनैतिक इच्छाशक्ति कहीं नजर नहींआती। अनीता की मौत के बाद तमिलनाडु में जगह–जगह विरोध प्रदर्शन शुरू हुए हैं, जिन पर पुलिस बल काबू पा ही लेगा। लेकिन उन सवालों पर काबू कैसे पाया जाएगा, जो एक भावी डाक्टर की मौत से उठ खड़े हुए हैं।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

योग्यता या संतुष्टिकरण

मंत्रालयों के ऐसे असमान वितरण में यह साफ नजर आ रहा है कि इसमें योग्यता, क्षमता और अनुभव को खास तवज्जो नहीं दी गई है। बल्कि संतुष्टीकरण पर अधिक जोर दिया गया है। इतने बड़े मंत्रिमंडल के साथ अगर विभागों का बंटवारा सोच–समझ के किया जाता तो मैक्सिमम गर्वनेंस या मिनिमम गवर्मेंट जैसे जुमलों की जगह बेहतर गर्वनेंस और बेहतर गर्वमेंट की हकीकत सामने होती। मोदी मंत्रिमंडल में तीसरी बार फेरबदल और विस्तार हुआ है और अभी यह कहा नहीं जा सकता कि यह अंतिम फेरबदल है। अभी डेढ़ साल का सफर और तय करना है, और अगले चुनावों की तैयारी भी। तो मुमकिन है क्षेत्रीय आधार पर एकाध बार बदलाव और हो। बहरहाल इस बार मंत्रिमंडल का जो विस्तार हुआ है, उसमें २७ केबिनेट, ३७ राज्यमंत्री और ११ स्वतंत्र प्रभार के मंत्री मिलाकर कुल ७५ मंत्री मोदी सरकार के हैं। इतने मंत्रियों के साथ लगभग सभी जरूरी क्षेत्रों के कार्य, व्यापार का निष्पादन सुचारू रूप से किया जा सकता है। लेकिन देखा जाए तो मंत्रालयों का बंटवारा बहुत सुविचारित या सुनियोजित तरीके से नहीं किया गया है। इसलिए कहीं एक ही क्षेत्र में कई मंत्री अलग–अलग रूपों से संलग्न हैं, तो कहीं एक ही मंत्री पर कई अलग–अलग क्षेत्रों का दायित्व डाल दिया गया है। प्रधानमंत्री के बाद मंत्रिमंडल में जो पांच–छह महत्वपूर्ण मंत्री हैं, उन्हें तो सोच–समझ कर मंत्रालय दिए गए हैं और वे इस जिम्मेदारी का महत्व जानते भी हैं। लेकिन क्रम जैसे–जैसे नीचे आता है, मंत्रालय विभाजन का आधार समझ नहीं आ रहा है। निर्मला सीतारमण को रक्षा मंत्री बनाए जाने पर यह कहा जा रहा है कि भाजपा ने महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया है। यह सही है कि वे इंदिरा गांधी के बाद दूसरी महिला रक्षा मंत्री हैं। लेकिन यहां महिला सशक्तिकरण से ज्यादा रक्षा में निजी क्षेत्र के बढ़ते दखल का है। इस वक्त रक्षा व्यापार में निजी पूंजी निवेश की कोशिशें तेजी से हो रही हैं और इसमें निर्मला सीतारमण उपयोगी साबित हो सकती हैं। इसके पहले वे वाणिज्य मंत्रालय संभाल चुकी हैं और उस दौरान विश्व व्यापार संगठन के कई कार्यक्रमों व बैठकों में हिस्सा ले चुकी हैं। लंदन की प्राइस वाटर हाउस फर्म में भी वे काम कर चुकी हैं। इस तरह वैश्विक पूंजीवाद से उनका पुराना परिचय है और रक्षा क्षेत्र के निजीकरण में इसका लाभ मिलेगा। कमोबेश यही स्थिति रेल मंत्रालय की है। सुरेश प्रभु के बाद पीयूष गोयल को यह जिम्मा दिया गया है। वे कोयला और रेल मंत्रालय एक साथ संभालेंगे और दोनों में निजी पूंजी के लिए संभावनाओं के दरवाजे खुले हैं। पहले पीयूष गोयल उर्जा मंत्रालय देख रहे थे, अब इसका स्वतंत्र प्रभाव राज्यमंत्री आरके सिंह को दिया गया है। हरदीप पुरी को शहरी विकास मंत्रालय दिया गया है, जो पहले वेंकैया नायडू संभाल रहे थे। मोदी सरकार का स्मार्ट सिटी का ड्रीम प्रोजेक्ट इसी के अंतर्गत आता है। नितिन गडकरी सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री तथा नौवहन मंत्री होने के साथ–साथ जल संसाधन मंत्री भी हैं और उमा भारती से नदी विकास और गंगा कायाकल्प का कार्यभार भी उन्हें दिया गया है। जबकि सुश्री भारती पेयजल और स्वच्छता मंत्री हैं। क्या पेयजल को जल संसाधन से अलग करना उचित है। एसएस अहलूवालिया और रमेश चंदप्पा जिगाजीनागी पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय में राज्य मंत्री हैं। जबकि अर्जुन राम मेघवाल और सत्यपाल सिंह जलसंसाधन और गंगा कायाकल्प में राज्य मंत्री हैं। इस तरह अकेले पानी पर छह मंत्री हैं। इससे देश में जलप्रबंधन सुलझेगा या और उलझेगा यह विचारणीय है। इसी तरह कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में केन्द्रीय मंत्री राधामोहन सिंह के साथ सुश्री कृष्णा राजा पुरुषोत्तम रूपाला व गजेंद्र सिंह शेखावत ये तीन राज्यमंत्री हैं। वाणिज्य व उद्योग मंत्री सुरेश प्रभु को बनाया गया है, उनके साथ के चौधरी राज्य मंत्री हैं। श्री चौधरी उपभोक्ता मामले, खाद्य व सार्वजनिक वितरण के भी राज्य मंत्री हैं। जबकि पी पी चौधरी कारपोरेट मामलों के राज्य मंत्री हैं और इसके केबिनेट मंत्री अरुण जेटली हैं। जिनके पास वित्त मंत्रालय भी है। वाणिज्य और उद्योग जब एक साथ हैं तो कारपोरेट को अलग करने का क्या औचित्य है। यही स्थिति स्वास्थ्य क्षेत्र की है। जगत प्रकाश नड्डा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री हैं, उनके साथ अश्विनी चौबे और अनुप्रिया पटेल राज्य मंत्री हैं। दूसरी ओर श्रीपाद येस्सो नाईक को आयुष मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसमें आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी के क्षेत्र आते हैं। क्या ये सब समेकित रूप से स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभाग को स्मृति ईरानी संभाल रही हैं, और वे कपड़ा मंत्री भी हैं। स्मृति ईरानी के साथ अजय टम्टा कपड़ा राज्य मंत्री हैं जबकि राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ सूचना एवं प्रसारण में राज्य मंत्री हैं और वे युवा मामले तथा खेल मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार भी संभाल रहे हैं। मंत्रालयों के ऐसे असमान वितरण में यह साफ नजर आ रहा है कि इसमें योग्यता, क्षमता और अनुभव को खास तवज्जो नहीं दी गई है, बल्कि संतुष्टीकरण पर अधिक जोर दिया गया है। इतने बड़े मंत्रिमंडल के साथ अगर विभागों का बंटवारा सोच–समझ के किया जाता तो बेहतर गर्वनेंस और बेहतर गर्वमेंट की हकीकत सामने होती।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

तिमला फल में मिला कैंसर का इलाज

✍ सुमन सेमवाल

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाने वाला मामूली फल तिमला बड़े काम का निकला है। जिस तिमला की फलों में कहीं भी प्रमुखता से गिनती नहीं की जाती, उसके भीतर कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की रोकथाम के गुण मौजूद हैं। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) की केमिस्ट्री डिवीजन के शोध में पता चला कि तिमला के तेल में चार ऐसे फैटी एसिड हैं, जिनसे कैंसर समेत अन्य बीमारियों का इलाज संभव है। इस शोध का प्रस्तुतीकरण दून में चल रहे १९वें राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में किया गया। केमिस्ट्री डिवीजन के वरिष्ठ विज्ञानी वाईसी त्रिपाठी के मुताबिक वनस्पति विज्ञान में तिमला को 'फिक्स आरिकुलाटा' नाम से जाना जाता है। पारंपरिक रूप से तिमला का नाम औषधीय गुणों के लिए लिया जाता रहा है, लेकिन अब तक यह पता नहीं था कि इस फल में कौन–कौन से तत्त्व मौजूद हैं।

इसी जानकारी के लिए विभिन्न स्थानों से फलों के सैंपल लिए गए और इनका तेल निकाला गया। जाँच में चौंकाने वाली बात पता चली कि तमाम औषधीय निर्माता कंपनी जिन तत्त्वों की मदद से कैंसर, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल का स्तर कम करने के लिए दवा बनाती हैं, वह सभी इसमें मौजूद हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक त्रिपाठी के मुताबिक राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में इस शोध के रखे जाने के बाद देश–विदेश की दवा निर्माता कंपनियों का ध्यान तिमला की तरफ जाएगा। यदि तिमला के तेल से दवाओं का निर्माण किया जाएगा तो बहुत संभव है कि गंभीर रोगों की दवाओं की कीमत भी कम होगी, क्योंकि कच्चे माल के रूप में तिमला पर्वतीय क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

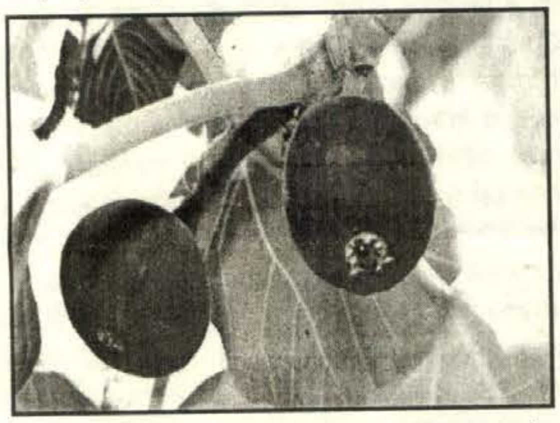

वन अनुसंधान संस्थान के शोध में सामने आया तथ्य

१.७६ फीसदी मिलता है तेल

इस अध्ययन में बतौर शोधार्थी शामिल रहीं निशात अंजुम ने बताया कि प्रयोगशाला जाँच में तिमला के फल में १.७६ फीसद तेल पाया गया। यह मात्र दवा निर्माण के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा फल को भी खाने पर बीमारियों से बचाव संभव है। उन्होंने उम्मीद जताई कि शोध के बाद इस फल को बढ़ावा मिलेगा और आसानी से सुलभ होने पर लोग प्राकृतिक रूप से भी इसका लाभ उठा सकेंगे।

राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में किया गया शोध का प्रस्तुतीकरण :

तिमला में पाए गए फैटी एसिड

१. वैसीसिनिक एसिड (इसमें कैंसररोधी क्षमता मौजूद होती है)

२. (अल्पा) लाइनोलेनिक एसिड (दिल की विभिन्न बीमारियों के इलाज में कारगर)

३. लाइनोलेनिक एसिड (दिल की धमनियों के ब्लाकेज हटाने में सहायक)

४. आलिक एसिड (लो–डेंसिटी लाइपोप्रोटीन की मात्रा शरीर में कम करता है, इस प्रोटीन से कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ता है)

गायत्री मंत्र विहीन ब्राह्मण, ब्राह्मणत्व विहीन होता है

✍ दिशा तिवारी

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सोचिअ विप्र जो वेद बिहीना।

तजि निज धरम विषय लयलीना।।

श्रीराम वनवास और पिता मरण के दुःख से दुखित भरत जी को संबोधित करते हुए गुरुदेव वशिष्ठ जी कहते हैं कि – **'हे भरत! वह विप्र (ब्राह्मण) सोचने योग्य है जो वेदहीन नहीं बल्कि वेद विहीन हो।'**

१. **ब्राह्मण** – जन्मना ब्राह्मणों! **ज्ञेय** : – ये सामान्य सिद्धांत है कि ब्राह्मण वंश में जन्म लेने पर ब्राह्मण जाना (ज्ञेयः) जाता है लेकिन कुछ अपवाद भी होते हैं क्योंकि रावण, कुंभकर्ण आदि पुलतस्य वंश में जन्म लेकर भी राक्षस कहलाए अतः जन्मना ब्राह्मणों ज्ञेयः अर्थात् ब्राह्मश वंश में जन्म लेने से ब्राह्मण जाना जाता है लेकिन कुछ अपवाद छोड़कर) २. **द्विज** : – संस्कारात् द्विज उयते – यज्ञोपवित संकार होने पर पुनः जन्म समझ कर द्वि+ज = दो बार जन्म लेने वाले जैसे पक्षी को पहले अंडे स्वरूप में फिर अंडे से चूजे के रूप में दोबारा जन्म लेना पड़ता है। ३. **विप्र** : – विद्यया याति विप्रत्वम् – अर्थ सहित वेद अध्ययन करने वाले विप्र हुए तथा... ४. **क्षत्रिय** : – त्रिभिः क्षोत्रिय उयते – अर्थात् १. जन्म (ब्राह्मण वंश में), २. संस्कार (यज्ञोपवित) और ३. कर्म (वेद अध्ययन) के सामंजस्य से श्रोत्रिय ब्राह्मण हुए।) लेकिन ब्राह्मण के कई कोटि हैं... १. ब्राह्मण २. द्विज ३. विप्र ४. श्रोत्रिय के अलावा भी ब्राह्मण की कोटि है... ५. वेदहीन और ६. वेद विहीन वेदहीन ब्राह्मण वे हुए जो वेद अध्ययन से दूर है। परंतु गायत्री मंत्र का सेवन करते हैं, जाप करते हैं। लेकिन इसके अलावा भी ब्राह्मण की एक कोटि है जो वेदविहीन है अर्थात् जो ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर भी गायत्री मंत्र से भी अनभिज्ञ हैं, गायत्री मंत्र का जाप नहीं करते हैं। (ऐसे वेद विहीन ब्राह्मण कलियुग में बहुतायत हैं... बृंद बहु होइहहिं कलियुग माहीं। (राक्षसाः कलिमाश्रित्य जायन्ते ब्रह्मयोनिषु। राष्ट्रभक्ति निषैनैव घ्नन्ति धर्म सनातनम् – ब्रह्म पुराण गौतमी महात्म्य में ब्राह्मणों को गौतम ऋषि के श्राप)।।

अर्थात् गायत्री मंत्र से अनभिज्ञ ब्राह्मण वेद विहीन हैं जो सभी तरह से सोचनीय हैं।

तजि निज धरम विषय लयलीना–

निज धरम – ब्राह्मणों का निज धर्म वेद अध्ययन, गुरु अर्थात् लोगों में व्याप्त अंधकार दूर कर सदुरु के रूप में रहना है – वर्णानां ब्राह्मणों गुरुः। स्वयं सन्मार्ग पर चलकर लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना ब्राह्मण धर्म है।

विषय लयलीना – वैसे ब्राह्मण जो ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर भी मदिरा, मांस आदि सेवन तथा क्रय–विक्रय करने वाले ब्राह्मण तजि निज धरम विषय लयीना हैं।

गुरुदेव वशिष्ठ जी कहते हैं कि – 'हे भरत! गायत्री मंत्र विहीन, वेद विहीन ब्राह्मण सोचने योग्य (सोचनीय) हैं।

मुश्किलों का हल है 'नम्रता'

✍ नरेन्द्र भारती

एक बार युधिष्ठिर भीष्माचार्य के पास गए और बोले, 'मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। वह यह कि यदि कोई प्रबल शत्रु किसी निर्बल राजा पर आक्रमण कर दे, तो उसे राजनीति की दृष्टि से क्या करना चाहिए?' भीष्म बोले, 'इसके जवाब में मैं एक कथा सुनाता हूँ।' और कहने लगे : 'सरित्पति समुद्र वैसे तो अपनी सभी पत्नियों से प्रसन्न थे, लेकिन वेत्रवती नदी से असंतुष्ट हो गए। वेत्रवती ने जब अपना अपराध पूछा, तो समुद्र ने कहा, 'तेरे किनारों पर बेंत के झाड़ बहुत हैं। लेकिन तूने आज तक बेंत का एक टुकड़ा भी मुझे लाकर नहीं दिया।

अन्य नदियाँ तो किनारे की सभी वस्तुएँ लाकर देती हैं, जबकि तूने साधारण सा बेंत भी नहीं दिया।' वेत्रवती ने उत्तर दिया, 'नाथ, इसमें मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। बात यह है कि जब मैं जोश के साथ तेज गति से आती रहती हूँ, तो सारे बेंत के झाड़ नीचे झुककर पृथ्वी से मिल जाते हैं। मेरे जाने के बाद पुनः ज्यों के त्यों सिर उठाकर खड़े हो जाते हैं। यही कारण है कि मुझे एक भी बेंत नहीं मिल पाता।' इस कथा को सुनाकर भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा कि राजा यदि निर्बल है, तो उसे शत्रु के साथ नम्रता का सहारा लेना चाहिए।

कथासार : नम्रता का सहारा लेकर हम बड़ी से बड़ी मुश्किलों से भी पार पा सकते हैं।

'घरेलू नुस्खे'

ठंड लगे जब आपको सर्दी में बेहोल।
नींबू मधु के साथ में अदरक पिए उबाल।।
लाल टमाटर लीजिए खीरा सहित स्नेह।
जूस करेला साथ हो दूर रहे मधुमेह।।
अजवायन और हींग ले लहसुन तेल पकाए।
मालिश जोड़ों की करे दर्द दूर हो जाए।।
कफ से पीड़ित हो अगर खांसी बहुत सताए।
अजवाइन की भाप ले कफ तब बाहर आए।।
मुँह में बदबू हो अगर दालचीनी मुख डाल।
बने सुगंधित मुख गंध दूर हो तत्काल।।
तुलसी दल लीजिए उठकर प्रातःकाल।
सेहत सुधरे आपकी तन–मन मालामाल।।
सात पत्र ले नीम के खाली पेट चबाए।
दूर करे मधुमेह के सब कुछ मन को भाए।।
अजवायन को पीसि गाढ़ा लेप लगाए।
चर्म रोग सब दूर हो तन कंचन बन जाए।
गाजर रस संग आंवला बीस और चालीस ग्राम।
रक्तचाप हृदय सही, पाए सब आराम।।

श्राद्ध करते समय ध्यान रखने योग्य २६ बातें

साभार एस्ट्रोमैटिक्स

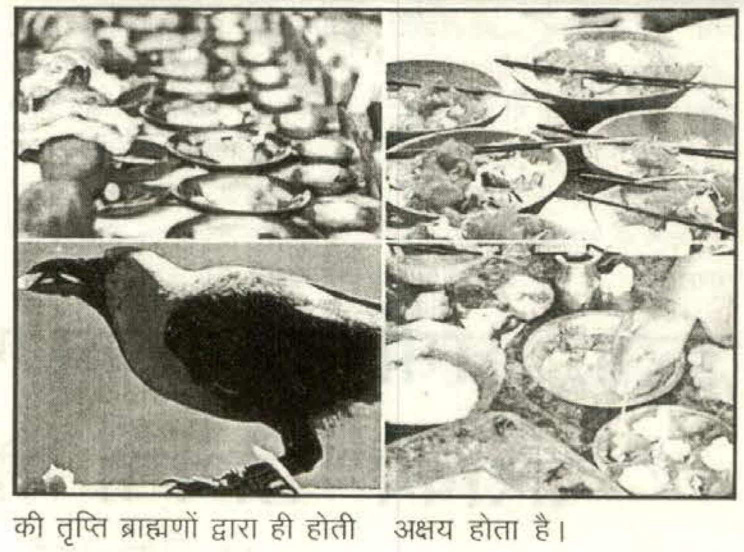

धर्म ग्रंथों के अनुसार श्राद्ध के सोलह दिनों में लोग अपने पितरों को जल देते हैं तथा उनकी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध करते हैं। ऐसी मान्यता है कि पितरों का ऋण श्राद्ध द्वारा चुकाया जाता है। वर्ष के किसी भी मास तथा तिथि में स्वर्गवासी हुए पितरों के लिए पितृपक्ष की उसी तिथि को श्राद्ध किया जाता है।

पूर्णिमा पर देहांत होने से भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को श्राद्ध करने का विधान है। इसी दिन से महालय (श्राद्ध) का प्रारंभ भी माना जाता है। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा से जो कुछ दिया जाए। पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पितृगण वर्षभर प्रसन्न रहते हैं। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि पितरों का पिण्ड दान करने वाला गृहस्थ दीर्घायु, पुत्र–पौत्रादि, यश, स्वर्ग, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, पशु, सुख– साधन तथा धन–धान्य आदि की प्राप्ति करता है।

श्राद्ध में पितरों को आशा रहती है कि हमारे पुत्र–पौत्रादि हमें पिण्ड दान तथा तिलांजलि प्रदान कर संतुष्ट करेंगे। इसी आशा के साथ वे पितृलोक से पृथ्वी लोक पर आते हैं। यही कारण है कि हिंदू धर्मशास्त्रों में प्रत्येक हिंदू गृहस्थ को पितृपक्ष में श्राद्ध अवश्य रूप से करने के लिए कहा गया है।

श्राद्ध से जुड़ी कई ऐसी बातें हैं जो बहुत कम लोग जानते हैं। मगर ये बातें श्राद्ध करने से पूर्व जान लेना बहुत जरूरी है क्योंकि कई बार विधिपूर्वक श्राद्ध न करने से पितृ श्राप भी दे देते हैं। आज हम आपको श्राद्ध से जुड़ी कुछ विशेष बातें बता रहे हैं, जो इस प्रकार हैं–

१. श्राद्धकर्म में गाय का घी, दूध या दही काम में लेना चाहिए। यह ध्यान रखें कि गाय को बच्चा हुए दस दिन से अधिक हो चुके हैं। दस दिन के अंदर बछड़े को जन्म देने वाली गाय के दूध का उपयोग श्राद्ध कर्म में नहीं करना चाहिए।

२. श्राद्ध में चाँदी के बर्तनों का उपयोग व दान पुण्यदायक तो है ही राक्षसों का नाश करने वाला भी माना गया है। पितरों के लिए चाँदी के बर्तन में सिर्फ पानी ही दिया जाए तो वह अक्षय तृप्तिकारक होता है। पितरों के लिए अर्ध्य, पिण्ड और भोजन के बर्तन भी चाँदी के हों तो और भी श्रेष्ठ माना जाता है।

३. श्राद्ध में ब्राह्मण को भोजन करवाते समय परोसने के बर्तन दोनों हाथों से पकड़ कर लाने चाहिए, एक हाथ से लाए अन्न पात्र से परोसा हुआ भोजन राक्षस छीन लेते हैं।

४. ब्राह्मण को भोजन मौन रहकर एवं व्यंजनों की प्रशंसा किए बगैर करना चाहिए क्योंकि पितर तब तक ही भोजन ग्रहण करते हैं जब तक ब्राह्मण मौन रहकर भोजन करें।

५. जो पितृ शस्त्र आदि से मारे गए हों उनका श्राद्ध मुख्य तिथि के अतिरिक्त चतुर्दशी को भी करना चाहिए। इससे वे प्रसन्न होते हैं। श्राद्ध गुप्त रूप से करना चाहिए। पिंडदान पर साधारणतया नीच मनुष्यों की दृष्टि पड़ने से वह पितरों को नहीं पहुँचता।

६. श्राद्ध में ब्राह्मण को भोजन करवाना आवश्यक है, जो व्यक्ति बिना ब्राह्मण के श्राद्ध कर्म करता है, उसके घर में पितर भोजन नहीं करते, श्राप देकर लौट जाते हैं। ब्राह्मण हीन श्राद्ध से मनुष्य महापापी होता है।

७. श्राद्ध में जौ, कांगनी, मटर और सरसों का उपयोग श्रेष्ठ रहता है। तिल की मात्रा अधिक होने पर श्राद्ध अक्षय हो जाता है। वास्तव में तिल पिशाचों से श्राद्ध की रक्षा करते हैं। कुशा (एक प्रकार की घास) राक्षसों से बचाते हैं।

८. दूसरे की भूमि पर श्राद्ध नहीं करना चाहिए। वन, पर्वत, पुण्यतीर्थ एवं मंदिर दूसरे की भूमि नहीं माने जाते क्योंकि इन पर किसी का स्वामित्व नहीं माना गया है। अतः इन स्थानों पर श्राद्ध किया जा सकता है।

९. चाहे मनुष्य देवकार्य में ब्राह्मण का चयन करते समय न सोचे, लेकिन पितृ कार्य में योग्य ब्राह्मण का ही चयन करना चाहिए क्योंकि श्राद्ध में पितरों की तृप्ति ब्राह्मणों द्वारा ही होती है।

१०. जो व्यक्ति किसी कारणवश एक ही नगर में रहने वाली अपनी बहिन, जमाई और भानजे को श्राद्ध में भोजन नहीं कराता, उसके यहाँ पितर के साथ ही देवता भी अन्न ग्रहण नहीं करते।

११. श्राद्ध करते समय यदि कोई भिखारी आ जाए तो उसे आदरपूर्वक भोजन करवाना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसे समय में घर आए याचक को भगा देता है उसका श्राद्ध कर्म पूर्ण नहीं माना जाता और उसका फल भी नष्ट हो जाता है।

१२. शुक्लपक्ष में, रात्रि में, युग्म दिनों (एक ही दिन में दो तिथियों का योग) में तथा अपने जन्मदिन पर कभी श्राद्ध नहीं करना चाहिए। धर्म ग्रंथों के अनुसार सायंकाल का समय राक्षसों के लिए होता है, यह समय सभी कार्यों के लिए निंदित है। अतः शाम के समय भी श्राद्धकर्म नहीं करना चाहिए।

१३. श्राद्ध में प्रसन्न पितृगण मनुष्यों को पुत्र, धन, विद्या, आयु, आरोग्य, लौकिक सुख, मोक्ष और स्वर्ग प्रदान करते हैं। श्राद्ध के लिए शुक्लपक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्ष श्रेष्ठ माना गया है।

१४. रात्रि को राक्षसी माना गया है। अतः रात में श्राद्ध कर्म नहीं करना चाहिए। दोनों संध्याओं के समय भी श्राद्धकर्म नहीं करना चाहिए। दिन के आठवें मुहूर्त (कुतप काल) में पितरों के लिए दिया गया दान अक्षय होता है।

१५. श्राद्ध में ये चीजें होना महत्त्वपूर्ण हैं–गंगाजल, दूध, शहद, दौहित्र, कुश और तिल। केले के पत्ते पर श्राद्ध भोजन निषेध है। सोने, चाँदी, कांसे, तांबे के पात्र उत्तम हैं। इनके अभाव में पत्तल उपयोग की जा सकती है।

१६. तुलसी से पितृगण प्रसन्न होते हैं। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि पितृगण गरुड़ पर सवार होकर विष्णु लोक को चले जाते हैं। तुलसी से पिंड की पूजा करने से पितर लोग प्रलयकाल तक संतुष्ट रहते हैं।

१७. रेशमी, कम्बल, ऊन, लकड़ी, तृण, पर्ण, कुश आदि के आसन श्रेष्ठ हैं। आसन में लोहा किसी भी रूप में प्रयुक्त नहीं होना चाहिए।

१८. चना, मसूर, उड़द, कुलथी, सत्तू, मूली, काला जीरा, कचनार, खीरा, काला उड़द, काला नमक, लौकी, बड़ी सरसों, काले सरसों की पत्ती और बासी, अपवित्र फल या अन्न श्राद्ध में निषेध हैं।

१९. भविष्य पुराण के अनुसार श्राद्ध १२ प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं–१. नित्य, २. नैमित्तिक, ३. काम्य, ४. वृद्धि, ५. सपिण्डन, ६. पार्वण, ७. गोष्ठी, ८. शुद्धर्थ, ९. कर्मांग, १०. दैविक, ११. यात्रार्थ, १२. पुष्टयर्थ।

२०. श्राद्ध के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं–

तर्पण – इसमें दूध, तिल, कुशा, पुष्प, गंध मिश्रित जल पितरों को तृप्त करने हेतु दिया जाता है। श्राद्ध पक्ष में इसे नित्य करने का विधान है। भोजन व पिण्ड दान पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को भोजन दिया जाता है। श्राद्ध करते समय चावल या जौ के पिण्ड दान भी किए जाते हैं।

वस्त्रदान – वस्त्र दान देना श्राद्ध का मुख्य लक्ष्य भी है।

दक्षिणा दान – यज्ञ की पत्नी दक्षिणा है जब तक भोजन कराकर वस्त्र और दक्षिणा नहीं दी जाती उसका फल नहीं मिलता।

२१. श्राद्ध तिथि के पूर्व ही यथाशक्ति विद्वान ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलवा दें। श्राद्ध के दिन भोजन के लिए आए ब्राह्मणों को दक्षिण दिशा में बैठाएँ।

२२. पितरों की पसंद का भोजन दूध, दही, घी और शहद के साथ अन्न से बनाए गए पकवान जैसे खीर आदि है। इसलिए ब्राह्मणों को ऐसे भोजन कराने का विशेष ध्यान रखें।

२३. तैयार भोजन में से गाय, कुत्ते,, कौए, देवता और चींटी के लिए थोड़ा सा भाग निकालें। इसके बाद हाथ जल, अक्षत यानी चावल, चन्दन, फूल और तिल लेकर ब्राह्मणों से संकल्प लें।

२४. कुत्ते और कौए के निमित्त निकाला भोजन कुत्ते और कौए को ही कराएँ किंतु देवता और चींटी का भोजन गाय को खिला सकते हैं। इसके बाद ही ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। पूरी तृप्ति से भोजन कराने के बाद ब्राह्मणों के मस्तक पर तिलक लगाकर यथाशक्ति कपड़े, अन्न और दक्षिणा दान कर आशीर्वाद पाएँ।

२५. ब्राह्मणों को भोजन के बाद घर के द्वार तक पूरे सम्मान के साथ विदा करके आएँ। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि ब्राह्मणों के साथ–साथ पितर लोग भी चलते हैं। ब्राह्मणों के भोजन के बाद ही अपने परिजनों, दोस्तों और रिश्तेदारों को भोजन कराएँ।

२६. पिता का श्राद्ध पुत्र को ही करना चाहिए। पुत्र के न होने पर पत्नी श्राद्ध कर सकती है। पत्नी न होने पर सगा भाई और उसके भी अभाव में सपिंडों (एक ही परिवार के) को श्राद्ध करना चाहिए। एक से अधिक पुत्र होने पर सबसे बड़ा पुत्र श्राद्ध करता है।

ईसाई धर्मान्तरण का एक कुत्सित तरीका–प्रार्थना से चंगाई

डॉ. विवेक आर्य

विश्व इतिहास इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हिन्दू समाज सदा से शांतिप्रिय समाज रहा है। एक ओर मुस्लिम समाज ने पहले तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की कोशिश की थी, अब सूफियों की कब्रों पर हिन्दुओं के सर झुकवाकर, लव जिहाद या ज्यादा बच्चे बनाकर भारत की सम्पन्नता और अखंडता को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी ओर ईसाई समाज हिन्दुओं को ईसा मसीह की भेड़ बनाने के लिए रुपये, नौकरी, शिक्षा अथवा प्रार्थना से चंगाई के पाखंड का तरीका अपना रहे हैं।

समाचार पत्र में छपी खबर की चर्च द्वारा दिवंगत पोप जॉन पॉल द्वितीय को संत घोषित किया गया है ने सेमेटिक मतों की धर्मान्तरण की उसी कुटिल मानसिकता की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। पहले तो हम यह जानें कि यह संत बनाने की प्रक्रिया क्या है?

सबसे पहले ईसाई समाज अपने किसी व्यक्ति को संत घोषित करके उसमें चमत्कार की शक्ति होने का दावा करते हैं। विदेशों में ईसाई चर्च बंद होकर बिकने लगे हैं और भोगवाद की लहर में ईसाई मत मृतप्राय हो गया है। इसलिए अपनी संख्या और प्रभाव को बनाये रखने के लिए एशिया में वह भी विशेष रूप से भारत के हिन्दुओं से ईसाई धर्म की रक्षा का एक सुनहरा सपना वेटिकन के संचालकों द्वारा देखा गया है। इसी श्रृंखला में सोची–समझी रणनीति के अंतर्गत पहले भारत से दो हस्तियों को नन से संत का दर्जा दिया गया था। पहले मदर टेरेसा और बाद में सिस्टर अलफोंसा को संत बनाया गया था और अब जॉन पॉल को घोषित किया गया है।

यह संत बनाने की प्रक्रिया अत्यंत सुनियोजित होती है। पहले किसी गरीब व्यक्ति का चयन किया जाता है। जिसके पास इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं होते, जो बेसहारा होता है, फिर यह प्रचलित कर दिया जाता है कि बिना किसी इलाज के केवल मात्र प्रार्थना से उसकी बीमारी ठीक हो गई और यह कृपा एक संत के चमत्कार से हुई। गरीब और बीमारी से पीड़ित जनता को यह संदेश दिया जाता है कि सभी को ईसा मसीह को धन्यवाद देना चाहिए और ईसाइयत को स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि पगान पूजा अर्थात् हिन्दुओं के देवता जैसे श्रीराम और श्रीकृष्ण में चंगाई अर्थात् बीमारी को ठीक करने की शक्ति नहीं है। अन्यथा उनको मानने वाले कभी के ठीक हो गए होते।

अब जरा ईसाई समाज के दावों को परीक्षा की कसौटी पर भी परख लेते हैं–

मदर टेरेसा जिन्हें दया की मूर्ति, कोलकाता के सभी गरीबों को भोजन देने वाली, अनाथ एवं बेसहारा बच्चों को आश्रय देने वाली, जिसने अपने जन्म देश को छोड़कर भारत के गटरों से अतिनिर्धनों को सहारा दिया, जो कि नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता थी, एक नन से संत बना दी गई की वास्तविकता से कम ही लोग परिचित हैं। जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मान्तरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ, तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जाएगा। तब प्रधानमंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है और उनका असली प्रयोजन तो ईसाई धर्मान्तरण है।

यही मदर टेरेसा दिल्ली में दलित ईसाईयों के लिए आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थीं। महाराष्ट्र में १९४७ में एक चर्च के बंद होने पर उसकी संपत्ति को आर्यसमाज ने खरीद लिया। कुछ दशकों के पश्चात् ईसाईयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज को देख लेने की धमकी दी गई थी।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आँखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी। यह जानने की सभी को शेष पृष्ठ 11 पर

सैनिक का थाल या गम्भीर सवाल?

राजीव चौधरी

बीएसएफ के एक जवान तेज बहादुर यादव ने वीडियो जारी करके घटिया खाना दिए जाने और अफसरों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया जिसके बासद एक–एक कर कई जवान अपनी परेशानी लेकर सामने आये। इस सब के बाद देश में एक बहस शुरू हो गई है। क्या सीमा पर जवानों को भरपेट खाना मिलता है या नहीं? क्या सैनिक अफसरशाही से त्रस्त है? आदि–आदि कई सवाल सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों तक आये हैं। इसमें एक तरफ जहाँ कुछ लोगों ने दावा किया है कि कुछ अफसर राशन और अन्य चीजें गाँवों में आधी कीमत पर बेच देते हैं, वहीं कुछ पूर्व सैनिकों ने खराब खाना परोसे जाने की खबर को खारिज किया है। हालाँकि पिछले दिनों ८।ळ की एक रिपोर्ट में भी यह बात सामने आई थी कि कई जगह देश के सैनिक खाने की क्वालिटी, मात्रा और स्वाद से संतुष्ट नहीं हैं। जबकि अन्य जगह तैनात कुछ जवान कह रहे हैं कि हो सकता है कि यादव के आरोप उनके निजी पसंद पर आधारित हों। हमारे मेस का खाना औसत है, लेकिन इतना भी बुरा नहीं जितना कि तेज बहादुर बता रहे हैं। "इंटरनेशनल बॉर्डर पर तैनाती की तुलना में लाइन ऑफ कंट्रोल पर सेवाएँ देना बेहद मुश्किल होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि मौसम और इलाका, दोनों ही चुनौतियाँ पैदा करते हैं। फिर भी राशन सभी को मिलता है। अच्छी क्वालिटी का यह राशन अच्छी मात्रा और विकल्पों के तौर पर उपलब्ध होता है।"

जवान के द्वारा पोस्ट की गई इस वीडियो को करीब पौने दो लाख लोग शेयर कर चुके हैं जिसे करीब ३१ लाख लोगों ने देखा। वीडियो को देखने के बाद न्यूज चैनल और सोशल मीडिया के जरिये सेना के लिए काफी संजीदगी लोगों के अंदर दिखाई दे रही है। जो होनी भी चाहिए। आखिर गर्मी, धूप, बरसात हो या कड़ाके की ठंड जिस मुस्तैदी से जवान अपनी ड्यूटी कर देश की सीमाओं की सुरक्षा कर रहे हैं यदि उन्हें ठीक से रोटी भी नसीब नहीं होगी तो फिर हमारा विश्व की सुपरपावर बनने का सपना बेमानी सा लगता है। क्योंकि सीमा पर जवान और खेत में किसान किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत होती है। जवान ने जिस तरह इस वीडियो में कहा कि इसके बाद मैं जीवित रहूँ या न रहूँ लेकिन मेरी बात देश के सिस्टम के खिलाफ उठनी चाहिए। उपरोक्त कथन भी लोगों की संवेदना को झिंझोड़ता सा नजर आया। हालाँकि बी.एस.एफ. ने जवान पर इसके उलट गंभीर आरोप लगाते हुए सफाई देते हुए कहा कि जवान तेजप्रताप की मानसिक हालत ठीक नहीं है वह अक्सर शराबखोरी, बड़े अधिकारियों के साथ खराब व्यवहार के आचरण से जाना जाता रहा है। वर्ष २०१० में तो एक उच्च अधिकारी को बंदूक दिखाने के जुर्म में उसे ६० दिनों की जेल भी हो चुकी है। बीएसएफ और जवान तेज बहादुर यादव के

आरोप–प्रत्यारोप झूठे हैं या सच्चे यह तो अभी कहा नहीं जा सकता लेकिन इस मामले की केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा निष्पक्ष जाँच जरूरी होनी चाहिए।

जहाँ एक ओर सीमा सुरक्षा बल के जवान तेज बहादुर ने सेना में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने का दावा किया है वहीं कुछ लोग इसे जवान की महज नाराजगी बता रहे हैं। पर इस बहस में यह सवाल जरूर उठना लाजिमी है कि क्या सेना अंदरूनी रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त है? यदि देश की आजादी के बाद तुरन्त हुए जीप घोटाले को अलग भी रख दें तो कारगिल युद्ध में शहीद सैनिकों के लिए ताबूत में भी घोटाला सामने आया था। २००७ में लद्दाख में मीट घोटाला और २००६–०७ में ही अंडा और शराब घोटाला सामने आया था। एक अन्य राशन घोटाले में लेफ्टिनेंट जनरल एस.के. साहनी को दोषी पाए जाने के बाद जेल भेजा गया था। इससे साफ जाहिर शेष पृष्ठ 10 पर

मुस्लिम महिलाओं का शंखनाद

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

तीन तलाक पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय पर जहां हजारों लाखों पीडित मुस्लिम महिलाएं प्रसन्नता व्यक्त कर रही है और भविष्य में इस अन्यायी प्रथा से बचने वाली लाखो–करोड़ों मुस्लिम बालिकाएं व युवतियां भी स्वयं को कुछ स्वतंत्र व सुरक्षित समझने का साहस कर रही है, वही कुछ मुस्लिम धर्म के कट्टरपंथी मौलवी, उलेमा व मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य आदि अपनी अपनी संकीर्ण मानसिकता के कारण इस निर्णय का विरोध कर रहें है । कोई धमकी भरे अंदाज में कह रहा है कि शरिया में किसी को हस्तक्षेप करने का अधिकार नही, धार्मिक आस्थाओं से खिलवाड़ नही होगा वरना यह बहुत मुश्किल हो जायेगा आदि आदि। अधिकांश उलेमाओं व कुछ मुस्लिम नेताओं ने भी कुछ ऐसे ही क्रोधित तेवर दिखाते हुए अपना विरोध प्रकट किया है। ध्यान रहें कि जब इस तीन तलाक के विवाद पर पिछले वर्ष से निरंतर चर्चाऐं हो रही थी तब भी कुछ कट्टरपंथियों ने देश में गृह युद्ध जैसी स्थिति बनाने की धमकी तक देने का दुःसाहस किया था। लेकिन किसी ने क्या कभी यह सोचा कि यह कैसी मुस्लिम धार्मिक कुप्रथा है जिसमें एक साथ तीन बार तलाक को अभिव्यक्त करने के अनेक रुपो में से किसी भी एक प्रकार से एक पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे देता है। परंतु उस पीड़ित मुस्लिम महिला जिससे

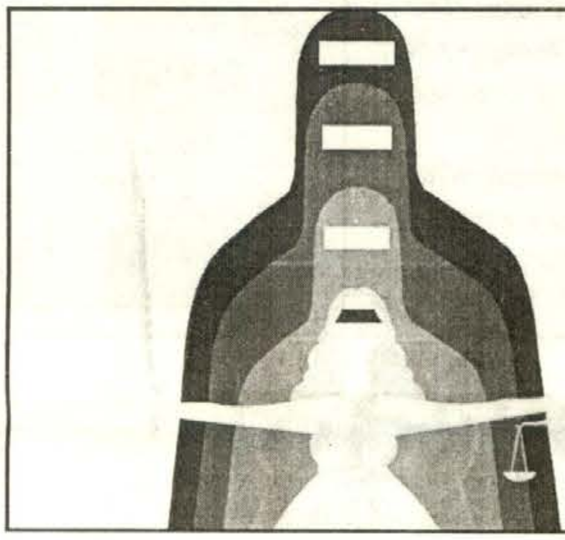

निकाह के समय तीन बार कुबूल है कहलवाया जाता है, परंतु तलाक में उसकी कोई सहमति नहीं ली जाती तो क्या यह एक पक्षीय अन्याय नहीं हुआ? किसी भूल सुधार व पश्चाताप की स्थिति में अपने पूर्व पति से तलाकशुदा महिला का पुनः निकाह के लिए हलाला जैसी व्यवस्था व्यभिचार को बढ़ावा देकर मानवीय संवेदनाओं का शोषण व चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा ही तो है। तलाकशुदा मुस्लिम महिला अपने बच्चों को लेकर दर दर की ठोकरें खाने को विवश होती रहें फिर भी सारा कट्टरपंथी समाज अपनी दकियानूसी धार्मिक कुरीतियों के कारण सब कुछ चुपचाप सहता रहें। इस प्रकार सदियों से मुस्लिम महिलाओं का मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न होता आ रहा है। मुस्लिम पुरुषों की ऐसी अधिनायकवादी सोच के कारण समान्यतः पीड़ित मुस्लिम महिलायें मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को मुस्लिम मर्द पर्सनल लॉ बोर्ड भी कहने लगी है। अधिकाँश कट्टरपंथी व सेक्युलर कहते है कि सरकार को धार्मिक मामलो में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। परंतु सरकार का अपने नागरिको को ऐसे अमानवीय अत्याचारों से बचाने का संवैधानिक दायित्व तो है। निसंदेह न्यायपालिका जनता के अधिकारों की रक्षा एक अभिभावक के रुप में करती है। विशेषतः कानूनों को व्यवस्था सामाजिक जीवन को उन्नति की ओर ले जाने के लिए की जाती है, किसी के जीवन को अंधेरी कोठरी में बंद करने के लिए नहीं। अतः आज के वैज्ञानिक युग में जब आधुनिक समाज चारों ओर अपनी अपनी प्रतिभाओं के अनुसार निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है तो उस परिस्थिति में मुस्लिम महिलाओं को तलाक, हलाला, मुताह व बहुविवाह जैसी अमानवीय कुरीतियों से छुटकारा दिलवाना सभ्य समाज का दायित्व है साथ ही राष्ट्रीय संवैधानिक व्यवस्था भी मानवीय अधिकारों की रक्षा के प्रति अनिवार्य रुप से संवेदनशील होती है।

वस्तुतः तीन तलाक, हलाला व बहुविवाह आदि अत्याचारी कुरीतियों से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं की सजगता व सक्रियता ने ही न्याय की मांग करके अपने स्वतंत्र अधिकारो के लिए संघर्ष छेड़ा है। इस अत्यंत पीड़ादायक कुप्रथाओं के विरुद्ध मुस्लिम महिलाओं का शंखनाद हमारे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समाज पर भी एक करारा तमाचा है, जो धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते नहीं थकता परंतु मुस्लिम युवतियों व महिलाओं पर सदियों से हो रहे ऐसे अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने से भी डरता है। पिछले वर्ष मुस्लिम महिलाओ के एक स्वयं सेवी संगठन ने मुस्लिम महिलाओं का सर्वे करवाया जिसमें ९२ प्रतिशत मुस्लिम महिलायें तीन तलाक पर रोक चाहती हैं। देश के कोने कोने से शायरा, आफरीन, इशरत, गुलशन, आतिया , नूरजहां, जकिया आदि अनेक पीड़ित व जागरुक मुस्लिम महिलाओं ने जिस प्रकार इन कुप्रथाओं के विरुद्ध एकजुट होकर न्याय के लिए संघर्ष किया है वह सराहनीय है। इसी के प्रभाव में केंद्र सरकार ने विधि आयोग द्वारा पिछले दिनों इन विवादो को दूर करने के लिए एक सर्वे भी कराया और उसका परिणाम भी मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में ही रहा। यहां यह उल्लेखनीय हैं कि एक–दो वर्ष से भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं के अत्याचारों के प्रति विरोधी विचार विकसित करने में इलेक्ट्रानिक मीडिया की भी विशेष भूमिका रही। साथ ही सोशल मीडिया के अति व्यस्त नेटवर्क ने तो इन कुरीतियों को समाप्त करवाने और मानवता की रक्षा के लिये आधुनिक समाज को जागरुक करने में महत्पूर्ण भूमिका निभाई है। क्योंकि अधिकांश देशवासियों को तो ऐसी घोर पीड़ादायक अन्यायकारी व्यवस्था का ज्ञान भी नही था।

अतः ऐसे में एक साथ तीन तलाक तलाक–ए–बिद्दत पर माननीय उच्चतम न्यायालय का निर्णय अत्यंत सराहनीय व प्रशंसनीय है। अनेक मुस्लिम धर्म गुरु इस कुप्रथा के पक्ष में अभी भी खड़े है और सर्वोच्च न्यायालय के बहुमत से हुए निर्णय का विरोध करके भारत सरकार को भी चेतावनी देने की कुचेष्ठा कर रहें है। क्योंकि १९८५ में एक तलाकशुदा पीड़ित बेगम शाहबानो के पक्ष में दिये गये उच्चतम न्यायालय के निर्णय को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी पर मुस्लिम राजनीति का अनैतिक दबाव डालकर १९८६ में बदलवा दिया था, इसलिए कुछ कट्टरपंथी अभी भी इस भुलावे में है कि वह पुनः ऐसा करवा सकते है। समान नागरिक संहिता से इस कुप्रथा का कोई संबंध नहीं फिर भी मुल्लाओं ने मुस्लिम समाज में इसका एक ऐसा भय बना रखा है मानो की भविष्य में उनके शवों को भी दफनाने की प्रथा के स्थान पर कही जलाने की व्यवस्था न हो जाय? यहां यह कहना भी अनुचित न होगा कि समान नागरिक संहिता का विरोध करने वाले कट्टरपंथी मुल्लाओं को इन धार्मिक कूरीतियों के प्रति कोई आक्रोश क्यों नहीं आता? अगर उनकी धार्मिक पुस्तकों में ऐसी व्यवस्था है तो उसमें संशोधन करके उन्हें अपने समाज को इससे बाहर निकालना चाहिये। इस प्रकार के अज्ञानता से भरे रुढीवादी समाज को अपना विकास और सबका साथ तो चाहिए शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर)

प्रायः कहा जाता है कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें आधे अक्षर भी होते हैं। इसमें जैसा कहा जाता है वैसा ही लिखा जाता है किन्तु मेरी जानकारी के अनुसार दो शब्द ऐसे भी हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है जैसेः–

लिखा जाता है	लिखा जाना चाहिए
१. स्टेशन २. स्टैण्ड ३. स्थिर	**१. इस्टेशन २. इस्टैण्ड ३. इस्थिर**
४. स्प्रिट ५. स्ट्रैंग्थ ६. स्थित	**४. इस्प्रिट ५. इस्ट्रैंग्थ ६. इस्थित**
७. स्थल ८. स्कूटर ९. स्तर	**७. इस्थल ८. इस्कूटर ९. इस्तर**
१०. स्तन ११. स्थान आदि।	**१० इस्तन ११. इस्थान आदि।**

इन शब्दों में इ का प्रयोग क्यों नहीं किया जाता है जबकि बोलते समय बोला जाता है। यदि इ का प्रयोग शुरू हो जाए तो कमी दूर हो जाएगी। शुरु शुरु में विचित्र लग सकता है बाद में नहीं लगेगा।

आधे न् और आधे म् के लिए बिन्दी का प्रयोग किया जाता है क्यों? केवल आधे न् के लिए ही बिन्दी का प्रयोग उचित और सही है।

अन्य भाषाओं वाले जब हिन्दी सीखते हैं तो उन्हें भी सीखने में आसानी होगी।

अभी भी कई उर्दू भाषी, मुस्लिम जब उपरोक्त शब्दों में इ का प्रयोग करते हुए लिखते हैं तो कुछ विचित्र नहीं लगता है।

मुम्बई, सम्बोधन, सम्भाली, सम्भावली, चैम्पियन जैसे शब्दों के लिए आधे म् का ही प्रयोग उचित लगता है। यहां बिन्दी का प्रयोग अनुचित लगता है।

हिन्दी के विद्वानों से अनुरोध है कि वे अपनी राय अवश्य दें।

इन्द्र देव गुलाटी, पूर्व प्रधान, नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर

हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

आतंकवाद का मूल प्रेरणास्रोत : 'जन्नत'

''निःसंदेह अल्लाह ने ईमान वालों (मुसलमानों) से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है और उनके लिए जन्नत है, वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो मरते भी हैं और मारे भी जाते हैं'' (कु० ६:११)

कुरान की उपरोक्त आयत साफतौर पर बयान करती है कि यह अल्लाह और एक जिहादी मुसलमान के बीच एक निश्चित आदान–प्रदान है यानी कि किसी गैर–मुसलमान की हत्या करने या इस दैवी आज्ञा के पालन करने की प्रक्रिया में स्वयं मारे जाने के बदले में 'जन्नत' का पुरस्कार है। इस्लाम का पालन करने के लिए 'जन्नत' एक मुख्य प्रलोभन है।

मुहम्मद ने 'जिहाद की योजना' को 'सैक्स' और 'लूट' के आधार पर परिकल्पित किया। कामवासना की तृप्ति, जोकि इंसान की सबसे प्रबल इच्छा होती है, ही पहला प्रलोभन है, जिस पर 'जिहाद' की पूरी अवधारणा टिकी है। एक मुजाहिद, यानी कि इस्लाम का सैनिक, जोकि उस समय अरेबिया के शुष्क प्रदेश में कामवासना के उद्वेगों से पीड़ित था, को गैर–मुसलमानों की संहार योजना में भाग लेने के बदले में यौन सुखों के प्रलोभनों का वायदा किया कि–''यदि वह युद्ध में मारा गया तो 'जन्नत' में अनेक हूरों के साथ असीमित भोग–विलायों एवं यौन–सुखों का आनंद मिलेगा और यदि वह जीवित बच गया तो 'गाजी' कहलायेगा तथा उसको ''गैर–ईमान वालों' के लूट के माल, जिसमें उनकी स्त्रियाँ भी शामिल होंगी।

जरा अल्लाह की शालीनता और उसके तरीकों की पवित्रता पर भी ध्यान दें–

''निःसंदेह डर रखने वालों के लिए सफलता है बाग हैं और अंगूर और नवयुवतियाँ समान आयु वाली (उभरे उरोजों सहित) और छलकता मद्यपात्र।'' (७८,३१,३४)

हदीस तिरमिजी खंड–२ पृ. ३५–४० में दिये गये हूरों का वर्णन प्रस्तुत है–

१. हूर एक अत्यधिक सुन्दर युवा स्त्री होती है जिसका शरीर पारदर्शी होता है। उसकी हड्डियों में बहने वाला द्रव्य इसी प्रकार दिखाई देता है जैसे रूबी और मोतियों के अंदर की रेखायें। वह एक पारदर्शी सफेद गिलास में लाल शराब की भाँति दिखाई देती है।

२. उसका रंग सफेद है और साधारण स्त्रियों की तरह शारीरिक कमियों जैसे-मासिक धर्म, रजोनिवृत्ति, मल-मूत्र विसर्जन, गर्भधारण आदि सम्बंधित विकारों से मुक्त होती हैं।

३. प्रत्येक हूर किशोर वय की होती है, उसके उरोज उन्नत, गोल और बड़े होते हैं जो झुके हुए नहीं हैं।

४. प्रत्येक व्यक्ति जो जन्नत में जाता है उसको ७२ हूरें दी जायेंगी मरते समय उसकी उम्र कुछ भी हो, जब वह 'जन्नत' में प्रवेश करेगा तो वहाँ ३० वर्ष का युवक हो जायेगा और उसकी आयु आगे नहीं बढ़ेगी।

ऐसी हूरें और ऐसी जन्नत के लालच में क्या कोई आये बिना रह सकता है! यही कारण है कि कुरान इसकी विस्तार से व्याख्या करती है–

जन्नत का स्वरूप ऐसा है जिसमें अत्यन्त शान-शौकत और भोग-विलास के वातावरण में हूरें और गिलमान (लौंडे) निवास करते हैं। हूरें अत्यन्त सुन्दर, नौजवान, कुँवारी, आकर्षक आँखों और उभरे सीने वाली हैं, जबकि गिलमान अमर, मोती की तरह सुन्दर, नौजवान लड़के हैं, जो जरीदार सिल्क के वस्त्रों और चांदी के कंगलों (ब्रासलेटों) से सुसज्जित हैं। (३४:४१–४६, पृ.८०१, ४४:५१–५६ पृ. ६०७, ४७: १५, पृ. ६३१, ७८:३१:३६ पृ. ११२० हदीस मुस्लिम खंड ४:६८०५, पृ. १७८७)

अल्लाह 'जन्नत' में प्रत्येक 'ईमानवाले' मुसलमान को अनेक गिलमान और ७० से कम हूरें नहीं देगा। (एम. जेड. बयात, दी मैडिन्स आफ पैराडाइज, पृ. ३६–३७)

इस बात को सुनिश्चित करने के लिए वे भाग्यशाली हूरों के साथ भरपूर ऐशो-आराम कर सकें, अल्लाह उनकी वीर्यवत्ता १०० गुना बढ़ा देगा। (हदीस तिरमिधी करीम मिश्कतुल माहसिव अल हदीस खंड ४:अ. ४२, २४ पृ. १६८)

यह है इस्लामी नैतिकता का अन्तिम उद्देश्य और यही कारण है कि मुसलमान, जोकि अक्सर निराश रहते हैं, हिंसा पर आधारित, मनचाही, सुविधाजनक नैतिकता का अभ्यास करने के लिए तैयार रहते हैं। वे उन्हें 'जन्नत', जहाँ कि सदैव आनन्दपूर्ण जीवन है, वे वायदे पर, ऐसा करने को तैयार कर लेते हैं।

यहाँ इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि कोई मुसलमान बलात्कारी, हत्यारा, चोर या विश्वासघाती है। कयामत के दिन पैगम्बर अपनी तरफ से उसकी मध्यस्थता करेंगे और उसे 'जहन्नम' (नर्क) से बचाने और 'जन्नत' (स्वर्ग), जो कि कामवासना की पूर्ति और ऐयाशी की जगह है, में एक सीट दिलवाने की गांरटी देंगे। यही कारण है कि मुसलमान पैगम्बर मुहम्मद को 'शफी–ए–महशर' कहते हैं यानी जो 'कयामत के दिन' उनकी मध्यस्थता करेंगे।

निःसंदेह मुसलमान बनने का यही सबसे बड़ा आकर्षण है। यही कारण है कि भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमानों ने अरबी श्रेष्ठता के मानसिक जुए को अपने कंधों पर रख लिया है और वे दिल्ली, ढाका और करांची की अपेक्षा मक्का को ज्यादा पसंद करते हैं। लोग सामंतवादी परिस्थितियों में रहते हैं, जोकि 'इस्लामी–व्यवस्था' की विशेषताएं हैं। कष्टदायक सामाजिक स्थितियों में थोड़ी–सी प्रसन्नता पाने की मानव इच्छा के बारे में भी सोचिए –एक मनुष्य का 'जहन्नम' में रहते हुए, जैसाकि वर्तमान हालातों में है, जन्नत की आकांक्षा करना स्वाभाविक है। सारे मुसलमान भले ही वे बलात्कारी, ठग, हत्यारे और चोर ही क्यों न हों, 'जन्नत' को जायेंगे और समस्त गैर–मुसलमान चाहे वे कितने ही धर्मपरायण क्यों न हो, मुहम्मद पर ईमान न लाने के कारण जहन्नम की आग में झोंक दिए जायेंगे।

(शेष अगले अंक में)

राष्ट्रधर्म मासिक नवम्बर २०१७

कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाश्य

सिंहावलोकन विशेषांकङक

माननीय अटल जी के उत्तराधिकारी के रूप में जिन यशस्वी सम्पादकों ने 'राष्ट्रधर्म' का दायित्व सम्भाला, उनमें श्री रामशंकर अग्निहोत्री, पद्मश्री पं. वचनेश त्रिपाठी और भानुप्रताप शुक्ल इत्यादि के नाम भी साहित्य और संस्कृति के पटल पर चिरजीवी हैं। प्रथम अंक से लेकर अद्यावधि 'राष्ट्रधर्म' निरन्तर सामाजिक जागरण, राष्ट्र–जीवन की सुख–समृद्धि, राजनीतिक दिशा–दर्शन, चिरन्तन भारतीय संस्कृति की सुरक्षा तथा सर्वागीण समुन्नति के पथ–निर्देश के निमित्त निरन्तर सजग एवं सक्रिय रहा है। नवम्बर, २०१७ में 'राष्ट्रधर्म' का संग्रहणीय 'सिंहावलोकन' विशेषांक प्रकाश्य है। इसमें 'राष्ट्रधर्म' के प्रथम अंक से लेकर आगे के अंकों में संकलित महत्त्वपूर्ण, ऐतिहासिक, प्रासंगिक, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं दुर्लभ तथा रोचक सामग्री की प्रस्तुति रहेगी, ताकि नये पाठकों को भी –राष्ट्रधर्म' के ऐतिहासिक स्वरूप की जानकारी मिल सके। वे पुराने पाठक भी इससे लाभान्वित होंगे, जिनके संग्रह में 'राष्ट्रधर्म' के पुराने अंक अब अवशिष्ट नहीं हैं। संक्षेप में यह विशेषांक प्रत्येक वर्ग के पाठकों के लिए संग्रहणीय होगा।

विशेष सम्पर्क

१. अभिकर्त्ता/पाठक–बन्धु अपनी सम्भावित बढ़ी हुई माँग से ५ अक्टूबर, २०१७ तक कृपया अवश्य सूचित करने का कष्ट करें।

२. विज्ञापनदाता बन्धु–कृपया ५ अक्टूबर, २०१७ तक अपना विज्ञापन भेजकर हार्दिक सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

प्रबन्धक राष्ट्रधर्म 'मासिक', संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–२२६ ००४

दूरभाष : (०५२२) ४०४१४६४ (सम्पादकीय), २६६१३८४, २६६१३५८ (व्यवस्था)

E-mail : mgr.rdm.1947@gmail.com, editor_rdm_1947@rediffmail.com

बेटियां दुनियां की आधी आबादी समस्या और सोच

प्रेम राव

ये बिलकुल सच है कि बाजार जेन्डरवाद से ग्रसित है। लेकिन अपने लिये तो खुद ही खडा होना पडेगा। इस बात के लिये ८ साल की साफी ट्रो एक बेहतरीन उदहारण है। साफी ट्रो ने सोसल मिडिया पर एक "इन मांई शू" मुहिम चालू की, वो भी तब जब कि उसे अपने खिलोने वाले डायनासोर के शू अपने लिये नहीं मिले। इसलिये आगे आ कर अपने लिये चुनने का वक्त है ना की उस को स्वीकारने का जो कि बाजार हमें परोस रहा है।

१०वीं पास कर ११वीं में आने लडकियों के लिये आपको केरियर आप्सन देने वाले अनचाहे लोग बिना खोजे ही मिल जायेगें। यहां तक कि अगर किसी लडकी की पसन्द साईन्स बायो है तो पूरा मोहलला उसे गायनी के लिये प्रोत्साहित करता मिल जायेगा। कभी किसी ने भी नहीं सोचा कि क्या लडकियां ऑन्कोलोजिस्ट क्यों नहीं बन सकती हैं। पता नहीं क्यों लडकियों को आज भी एयर होस्टेज के तौर पर ही देख जाता है। पायलेट के विषय में तो बहूत ही दूर की सोच है।

बचपन की अगर बात करें तो बच्चीयों के लिये बार्बी डाल की अपनी ही एक पहचान बनी हुयी है इसका मिरेकल आज भी नहीं टूटा है। इस की दीवानगी इतनी है कि १६५६ में बाजार में आयी बार्बी के अनेक सेट बाजार में बच्चीयों के लिये उपलब्ध है और छोटेपन में बार्बी जेसा लुक देकर मां बाप अपनी बेटियो को फैशन की दुनिया में कदम रखवा देते हैं और लडकिया बार्बी जैसा लुक और उस जैसे ही कपडे पहना शुरू कर देती हैं। यही कारण है की वे अपनी खरीददारी भी बार्बी स्टोर से करती हैं। अपने व्यापार को बनाये रखाने के लिये इन स्टोरर्स द्वारा अनेक कोर्स भी चलाये जाते हैं।

साइक्लोजी रिसर्च सेक्स रोल के अनुसार यह निर्ष्कष सामने आया कि लडकियों के खिलोनो में जो मेंकअप ड्रेसअप का भाग होता है उसके ३१ प्रतिशत तक लडकियां इन से एस्पायर होती हैं। ये सब कहीं ना कहीं उनके दिमाग को प्रभावित करता है। इसके विपरीत लडको के खिलोनो में कॉम्पीटीशन, प्राब्लम सार्लविंग, इंवेन्सन और एक्सप्लोरेशन होता है और इसका फायदा भी उन्हे अपने केरियर बनाने में मिलता है। अनेक लडके तो काम्पीटीशन, केरियर, एडवान्समेंन्ट और लीडरशिप में यहीं से प्रवेश करते है। विश्वविद्यालय चुनाव इस बात का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है, जहां लडकियों को दरकिनार कर लडके अपना प्रभुत्व जमाते हैं।

गुडिया लडकियों के लिये

एक वो अल्फाज है जो उनके मष्तिष्क में जन्म के साथ ही जोड दिया जाता है। उनका सारा बचपन कहीं ना कहीं उस गुडिया के आसपास ही होता है। अगर हम बाजारवाद की बात करें तो ज्ञात होगा कि लडकियों के मीठे सपनो को भुनाने के लिये एक होड जारी है। इसलिये ही बात चाहे कास्ट्यूम हो या स्टाईल की या फिर फैसन की डॉल को इन खूबियो से सजा कर पेश किया जाता रहा है। ऐसा करने से यह संसार लडकियों को व्यवहारिक होने से रोक रहा है और लडको के खिलोनो की लडकियो में कोई कल्पना की दुनिया नजर नहीं आती है।

इन सभी तथ्यो के लिये हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। हमारे आसपास ही नजर डालें तो हमें सब कुछ नजर आ जायेगा। अनजाने में ही सही हम कहीं ना कहीं लडकियों के सपनों को पूर्ण करने में बाधक बन रहे हैं। लडकियों के कपडों में बेबी पिक नजर आयेगी तो लडको के कपडों में डायनासौर, ट्रेन, राकेट, आदि। ये भेद ही इनको इनके सपनो से बचपन से दूर करता आया है। जब लडकियों के कपडो में बार्बी, डाल, प्रिन्सेज और किटन्स होते है तो सवाल उठता है कि क्या लडकिया एस्टोनोट बनने का ख्वाब बुन रही है क्या। उनके लिये राकेट वाला गेम कहां हैं। हम जो मोके रोक रहे हैं बस उनको हवा देने भर की देर है जिसकी की वे भी हकदार हैं। आखिरकार कब तक वे बेबी डाल को सजाती रहेगीं। उन्हे भी आने वाली जिन्दगी के लिये तैयार होना है।

बच्चे जब समझदार होने लगते हैं तो वे एक सवाल हमेशा ही पूछते हैं कि बडे होकर क्या बनना है। हर एक का जवाब अलग अलग होता है कोई डाक्टर, कोई इन्जीनियर तो कोई फैशन डिजायनर बनना चाहता है। लेकिन यह भी देखने में आता है कि बच्चे अपने जवाब को बडी तेजी से बदलते भी है, क्योंकि वो अपना एक मांइन्ड सेट नहीं कर पाते है। लेकिन हम भी जानते हैं कि छोटे बच्चो से यह सवाल पूछने को कोई अभिप्राय नहीं होता। लेकिन इस सवाल की अहमियत को नजर अन्दाज भी तो नहीं किया जा सकता है। यह भी सम्भव है कि किसी बच्चे का जवाब एस्ट्रोनेट बनने का हो लेकिन ना बन पायें। अमरीका जैसे विकसित देश में आज भी केवल १० प्रतिशत ही नर्सिंग केरियर को चुनते हैं जब की मांग २२ प्रतिशत की बनी हुई है। केवत १८ प्रतिशत लडकियां ही एस्टोफिजिक्स को अपनाती है। हकिकत में बच्चो के जवाब उनकी मन की बात को समझने का एक मांध्यम भर हैं।

कुछ कम्पनीयों ने लडकियों के लिये बदलते परिवेश में अब सांइस से सम्बन्धित स्पेस एप्लीकेशन, डायनासौर, ट्रेन्स, खास क्लोदिंग लाइन्स, बडिंग स्टेम आदी लान्ज किये हैं। इसकी शुरुआत मैलारी कैचपोल और जैनीफर ने एक मुहिम चला कर की है। इनके द्वारा इसे लान्ज करने की घटना भी बडी ही दिलचस्प है। हमारी बेटिया अपने कपडो में साईन्स, मेंथ्स, इन्जिनियरिंग, टेक्नालोजी को शाामिल करना चाहती है लेकिन इसका अभाव था। लोगों को लगता था कि ये सब लडकियों के लिये नहीं है। ऐसे में इन दोनो ने मिल कर एक सन्देश दिया कि लडकियां कुछ भी कर सकती हैं, कुछ भी पहन सकती हैं, जो वो करना चाहें या पहनना चाहें।

ये बिलकुल सच है कि बाजार जेन्डरवाद से ग्रसित है। लेकिन अपने लिये तो खुद ही खडा होना पडेगा। इस बात के लिये ८ साल की साफी ट्रो एक बेहतरीन उदहारण है। साफी ट्रो ने सोसल मिडिया पर एक "इन मांई शू" मुहिम चालू की, वो भी तब जब कि उसे डायनासोर के शू अपने लिये नहीं मिले। इसलिये आगे आ कर अपने लिये चुनने का वक्त है ना की उस को स्वीकारने का जो कि बाजार हमें परोस रहा है। ये समस्या दुनियां की आधी आबादी की है। "दी फीमेंन स्टिक" की लेखिका "बैट्टी फ्रीडेन" ने अपनी २७ दोस्तो के साथ मिल कर यू एस का सबसे बडा वूमेंन मूवमेंन्ट शुरु किया "नाऊ" और इसमें एक भी पुरुष को सम्मलित नहीं किया गया। इस मूवमेंन्ट का सबसे बडा उद्धेश्य यह था कि बाजारवाद में जो लिंग भेद है उसके आधार पर महिलाओं को समान अधिकार से दूर ना किया जाय। इस संस्था ने यू एस में अपनी धाक जमाने के साथ साथ महिलाओं को अधिकार दिलाने में भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। इस संस्था की वजह से ही महिलाओं ने राजनीति में प्रवेश किया जो कि एक बहुत ही बडा एचीवमेंन्ट है। शिक्षा के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन इस संस्था की वजह से आया है। आज अमरीका में "नाऊ" के ५२ लाख से ज्यादा महिलाऐं सदस्य है जो कि दर्शाता है कि कोई भी मूवमेंन्ट छोटा नहीं होता है। बस उद्धेश्य के साथ साथ कार्यप्रणाली पर फोकस करना होगा।

भारत में लडकियों को एक अभिशाप की तरह से देखा जाता रहा है। विशेष रूप से हरियाणा में। अत्यन्त प्रयासों के पश्चात २०१६ में हरियाणा में लडकियों का आंकडा प्रति पुरूष जो कि पूर्व में ८४३ था वह ६२१ पर पहुचा है। पूर्व में लडकियों को कोख में ही भ्रूण हत्या कर देने वाले लोग अब अनेकानेक पाबंदियो के पश्चात कन्या हत्या करने पर उतारू हैं। इन सभी मानसिकताओं को बदला जाना आवश्यक है। पूर्व में महाभारत काल में औरतों और लडकियों को सम्पत्ति समझा जाता था और इसी कारण खरीद फरोस्त भी होती थी। सामन्तवाद युग में भी इसी सोच को पोराणिक मान्यता प्रदान कर उसी को बलवती किया गया। लेकिन सोच और समय ने लोकतन्त्र में वैचारिकता के कारण तथा महिलाओं के आन्दोलनो के कारण अपने विचारों में परिवर्तन लाना पडा। अब वो स्थिति नहीं है कि हम लडकियों को सम्पत्ति समझे। अब समानता का अधिकार हमें इनके प्रति बाजारवाद से ऊपर उठ कर सामाजिक परिवर्तन की रूपरेखा बनाने के लिये विवश करता है। शिक्षा द्वारा तथा स्त्रीवाद के आन्दोलनो के माध्यम से पुरुषवाद अपने कदम पीछे लेने को मजबूर जरूर हुआ है, लेकिन फिर भी भौतिकवाद ने अपनी जडे इतनी मजबूत जमा रखी है कि उन्हे उखाडने के लिये अभी भी ५० वर्ष तक इन्तजार करना होगा। राजनीति में कुछ गिने चुने नामों को अगर छोड दिया जाय तो इसकी रिक्तता सबसे ज्यादा है। केवल शिक्षा के क्षेत्र तथा नर्सिंग के अलावा आज भी अन्य जगह लडकियों की संख्या नगण्य ही है। पुरूषवाद पूर्ण रूप से हावी है तथा बाजारवाद भी इस तथ्य को हवा देने में पीछे नहीं हैं। आज भी बाजार में उन वस्तूओ की आधिक्यता है जो कि लडको के लिये उपयोगी तथा मांईड सेट के लिये आवयश्यक है। लडकियों के किये उन के भविष्य निर्माण के लिये बाजार शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री प्रकाश जावडेकर जी,

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

शास्त्री भवन, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

विषय : मिजोरम में हिंदी शिक्षकों की दुर्दशा।

महोदय,

लेखक श्री विनोद बब्बर ने मिजोरम के स्कूलों में हिंदी शिक्षकों की दुर्दशा का चिंताजनक वर्णन प्रस्तुत किया है। १३०५ हिंदी शिक्षकों का वेतन इसलिए बंद कर दिया गया है क्योंकि उन्हें अब केंद्र सरकार से राज्य सरकार को हिंदी शिक्षकों के वेतन के लिए ५ वर्ष तक दी जाने वाली धनराशि रुक गई है। चूँकि विद्यमान व्यवस्था के अनुसार राज्य सरकार को ५ वर्ष के बाद हिंदी शिक्षकों का वेतन देना है, जोकि मिजोरम सरकार दे नहीं रही है, इसलिए हिंदी शिक्षक भूख हड़ताल पर हैं और अनेक बीमार हो गए हैं। महिला शिक्षिकाओं का गर्भपात हुआ है। इस प्रसंग में निवेदन है कि तत्काल :

१. मिजोरम सरकार से संपर्क करके इस मामले को उठाया जाए और हिंदी शिक्षकों के वेतन की व्यवस्था कराई जाए।

२. केंद्र सरकार हिंदी शिक्षण के लिए अनुदान की अवधि तब तक के लिए बढ़ाए, जब तक राज्य सरकार हिंदी शिक्षकों का वेतन देने के लिए तैयार न हो जाए।

३. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, इसके लिए विशेष अनुदान की व्यवस्था करे ताकि हिंदी शिक्षकों को, जो कठिन क्षेत्र में हिंदी की सेवा कर रहे हैं, उन्हें भुखमरी से बचाया जा सके।

इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।

साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : तीन तलाक, बहुविवाह और हलाला पर रोक लगाने की मांग।

महोदय,

तीन तलाक, बहुविवाह और हलाला जैसे भीषण अत्याचारों से मुस्लिम महिलाओं को छुटकारा दिलाने के लिये निम्न तथ्यों का संज्ञान लें:–

१. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड स्वयंभू बोर्ड है, जो हर हाल में अपने गलत कामों को सही ठहराने पर तुला हुआ है।

२. इसके लिए वह कुरान को तोड़ने–मरोड़ने से भी परहेज नहीं करता।

३. चारों सुन्नी मसलकों यानी संप्रदायों–हनफी, शाहफई, मालकी और हंबली के अनुसार तलाक कितनी बार बोला जाए, इसका संबंध एक अथवा एक से अधिक अवसरों पर घोषणा करने से नहीं है।

४. लिखित दलीलों में बोर्ड ने तीन तलाक को चारों सुन्नी संप्रदायों में मान्य होने का दावा किया है। यह बिलकुल गलत है।

५. बोर्ड की कानूनी और संवैधानिक हैसियत पर प्रश्न खड़े होने लगे हैं।

६. बोर्ड ने पिछले ४४ वर्षों में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक ढंग से नहीं किया है।

अतः यह सर्वथा उचित और आवश्यक है कि-

१. तीन तलाक, बहुविवाह और हलाला जैसी क्रूरतम प्रथाएँ तुरंत निरस्त कर दी जाएँ।

२. मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को अवैध घोषित कर दिया जाए।

३. केन्द्रीय मुस्लिम वक्फ बोर्ड के कब्जे वाली संपत्ति का अधिग्रहण कर लिया जाए और बोर्ड को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि बोर्ड के कब्जे वाली भूमि हिन्दुओं से छीनी हुई भूमि है।

४. तलाकशुदा पीड़िता मुस्लिम बहनों से विवाह करने वाले हिन्दुओं को विशेष प्रोत्साहन दिया जाए और उन्हें नौकरी दिए जाने का/स्व–रोजगार शुरू करने के अवसर प्रदान किए जाएँ।

इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का

सैनिक का थाल या गम्भीर....

होता है कि सेना और अर्द्धसैनिक बलों के अन्दर भ्रष्टाचार की जड़ें काफी हद तक समाई हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक सैनिक के लिए हर महीने २६०५ का भोजन भत्ता सरकार की ओर से देय होता है। हर वर्ष सेना तकरीबन १४४० करोड़ रुपये का राशन जवानों के लिए खरीदती है। सैनिकों को मौसम के हिसाब से पौष्टिक आहार सरकार जारी करती है लेकिन इसके बाद भी भोजन की शिकायत आती है क्यों? यह कारण जवानों के सामने स्पष्ट होने चाहिए। दरअसल भ्रष्टाचार का यह कोई अकेला मामला नहीं है। समय–समय पर यहाँ इस तरह के मामले उठते रहे हैं। यदि खाने–पीने के मामले को ही ले लिया जाये तो सरकारी कैंटीन हो या सरकारी स्कूलों में मिड–डे मील अक्सर शिकायतें सुनने को मिल ही जाती हैं। अभी हाल में नोटबंदी के दौरान सबने देखा था किस तरह काले धन के खिलाफ लागू हुई मुहिम में कुछ बैंकों द्वारा काले धन को सफेद करने का कार्य लोगों के सामने आया था। यह मानव स्वभाव होता है कि किसी भी कार्य को व्यक्ति कम से कम कष्ट उठाकर प्राप्त कर लेना चाहता है। वह हर कार्य के लिए एक छोटा और सुगम रास्ता खोजने का प्रयास करता है। इसके लिए दो रास्ते हो सकते हैं—एक रास्ता नैतिकता का हो सकता है जो लम्बा और कष्टप्रद भी हो सकता है और दूसरा रास्ता है छोटा किन्तु अनैतिक रास्ता। लोग अपने लाभ के लिए जो छोटा रास्ता चुनते हैं उससे खुद तो भ्रष्ट होते हैं दूसरों को भी भ्रष्ट बनने में बढ़ावा देते हैं।

कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी होती हैं जहाँ मनुष्य को दबाववश भ्रष्टाचार करना और सहन करना पड़ता है। इस तरह का भ्रष्टाचार सरकारी विभागों में बहुतायत से दिखता है। वह चाह कर भी नैतिकता के रास्ते पर बना नहीं रह पाता है क्योंकि उसके पास भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए अधिकार सीमित और प्रक्रिया जटिल होती है। इस सैनिक के दावे में कितना सच है कितना झूठ इसकी अभी कोई अधिकारिक पुष्टि नहीं हुई किन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि कोई मामला ऐसा हुआ ही न हो, एक कहावत है जहाँ आग लगी होती है धुआँ वहीं से निकलता है। सरकार को चाहिए कि इस मामले को यहीं दबाने के बजाय इस पर त्वरित, उचित और निष्पक्ष कार्यवाही करे। क्योंकि जवान किसी सरकार पर नहीं बल्कि कुछ उच्च अधिकारियों पर आरोप लगा रहा है। सरकार को सोचना चाहिए एक सिपाही देश के दुश्मन के तो छक्के छुड़ा सकता है लेकिन भूख के नहीं!

पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाए केंद्र सरकार

अखिल भारत हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं ने महानगर अध्यक्ष बबलू शर्मा के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा दशहरा के दिन मूर्ति विसर्जन पर रोक लगाने और मोहर्रम मनाने की अनुमति देने के विरोध में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला स्थानीय एटा चुंगी चौराहे पर फूंका इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता अशोक पांडे ने कहा पश्चिम बंगाल सरकार बंगाल को बांग्लादेश बनाने में लगी हुई है वोट बैंक के चलते मुसलमानों को ज्यादा अधिकार दिए जा रहे हैं एवं हिंदुओं को मारा काटा दबाया जा रहा है केंद्र सरकार को चाहिए कि वहां पर राष्ट्रपति शासन लगाएं। मालदा से लेकर पूरे पश्चिम बंगाल में सैकड़ों की संख्या में हिंदू मारे जा चुके। पिछले वर्ष भी राज्य सरकार ने इस तरह का आदेश दिया था जिसे हाई कोर्ट के आदेश के बाद खारिज किया इस तरह का आदेश देकर सरकार मुसलमानों और हिंदुओं को आपस में लड़ा कर राजनीती करना चाहती है। इस अवसर पर हरिशंकर शर्मा, राजीव कुमार, बोला, बबलू शर्मा, सचिन शर्मा, मनोज सैनी, सोनू बघेल, कान्हा आदि दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का | अमेरिका की सर्वश्रेष्ठ नेताओं....

के अनुसार सूची में निक्की हेली को २२वां, सीमा को २६वां , अमेरिकी उद्यम संस्थान में अर्थशास्त्री अर्पणा को ३२वां, होगन लोवेल्स में साझेदार नील कत्याल को ४०वां और सूचना एवं नियामक मामलों के कार्यालय के निदेशक नियोमी राव को ४२वां स्थान प्राप्त है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि भारतवंशियों ने पूरे विश्व में डंका बजाया है।

शेष पृष्ठ 1 का | और मजबूत हुए रिश्ते.......

एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। मोदी की पहली द्विपक्षीय म्यामां यात्र ऐसे समय में हो रही है जब नोबेल पुरस्कार विजेता सू की, की अगुवाई वाली म्यामां की सरकार सवा लाख रोहिंग्या मुस्लिमों को लेकर अंतरराष्ट्रीय दबाव का सामना कर रही है। रखाइन प्रांत में म्यामां की सेना द्वारा शुरू की गयी कार्रवाई के महज दो सप्ताह बाद ये सवा लाख रोहिंग्या मुसलमान बांग्लादेश चले गये हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की मोदी सरकार से मांग की है कि रोहिंग्या मुसलमनों को शीघ्र म्यांमार वापस भेजा जाये।

शेष पृष्ठ 9 का | बेटियां - दुनियां की आधी आबादी.......

में एक बहुत ही बडी रिक्तता है। अगर इस सन्दर्भ में प्रयास किये जायं तो हमें निश्चित रूप से सफलता हाथ लगेगी। आवश्यकता है तो केवल मात्र मजबूत इरादो के साथ एक मानसिक रूप से तैयारी की जिससे कि केवल लडकियों के मष्तिक पटल पर हम एक नयी रेखा खीच सकें तथा उन्हे बार्बी डाल, बेबी डाल जैसी परिस्थितियो से बाहर निकाल कर उनके भविष्य निर्माण के लिये काम कर सकें। अभिशाप की मानसिकता से निकल कर निर्माण की मानसिकता की और कदम बडाने होगें तभी इन सभी पर हम भौतिकवाद और बाजारवाद को पीछे छोड आगें बड पायेगें।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य..................................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 7 का | मुस्लिम महिलाओं का शंखनाद.......

परंतु उसको ठोस आधार देने वाली समान नागरिक संहिता स्वीकार नहीं, क्यों? यह कहां तक उचित है कि राष्ट्र में सुधारात्मक नीतियों का विरोध केवल इसलिए किया जाय कि कट्टरपंथी मुल्लाओं की आक्रमकता बनी रहें और मुस्लिम महिलाओं पर अमानवीय अत्याचार होते रहें? क्योंकि उन्हें अपनी संकीर्ण धार्मिक मान्यताओं से कोई समझौता तो दूर उसमें कोई दखल भी सहन नहीं? इस सारी न्यायायिक प्रक्रिया में यह पूर्णतः स्पष्ट हैं कि उपरोक्त सारा विवादित विषय केवल मुस्लिम पीड़ित महिलाओं और कुछ मुस्लिम महिलाओं के संगठन की ओर से ही उठाया गया है और वे स्वयं ही इसके लिये संघर्षरत है। अतः यह सोचना कि इसमें किसी प्रकार की राजनीति हो रही है या किसी विशेष राजनैतिक दल को कोई लाभ होगा सरासर गलत है। यह शुद्ध रुप से न्यायिक प्रक्रिया है और मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक की कुप्रथा से छुटकारा दिलवा कर मानवीय मूल्यो की रक्षा करके भारतीय न्याय व्यवस्था ने एक ऐतिहासिक साहसिक कदम उठाया है। अतः समस्त देशवासियों को माननीय सर्वोच्च न्यायालय में विश्वास रखते हुए उसके निर्णय का सम्मान करना चाहिये।

शेष पृष्ठ 6 का | ईसाई धर्मान्तरण का एक......

उत्सुकता होगी कि हिन्दुओं को प्रार्थना से चंगाई का संदेश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतों की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी? अब सिस्टर अलफोंसो का उदाहरण लेते हैं। वह केरल की रहने वाली थीं। अपने करीब तीन दशकों के जीवन में वे करीब २० वर्ष तक अनेक रोगों से स्वयं ग्रस्त रही थीं। केरल एवं दक्षिण भारत में निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने की प्रक्रिया को गति देने के लिए संभवतः उन्हें भी संत का दर्जा दे दिया गया और यह प्रचारित कर दिया गया कि उनकी प्रार्थना से भी चंगाई हो जाती है। अभी हाल ही में सुर्खियों में आये दिवंगत पोप जॉन पॉल स्वयं पार्किन्सन रोग से पीड़ित थे और चलने–फिरने से भी असमर्थ थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना पद बीमारी के चलते छोड़ा था। पोप जॉन पॉल को संत घोषित करने के पीछे कोस्टारिका की एक महिला का उदाहरण दिया जा रहा है जिसके मस्तिष्क की व्याधि का ईलाज करने से चिकित्सकों ने मना कर दिया था। उस महिला द्वारा यह दावा किया गया है कि उसकी बीमारी पोप जॉन पॉल द्वितीय की प्रार्थना करने से ठीक हो गई है। पोप जॉन पॉल चंगाई करने की शक्ति से संपन्न हैं एवं इस करिश्मे अर्थात् चमत्कार को करने के कारण उन्हें संत का दर्जा दिया जाये।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य आपस में वैमनस्य फैलाना नहीं है अपितु पाखंड खंडन है। ईसाई समाज से जब यह पूछा जाता है कि आप यह बतायें कि जो व्यक्ति अपनी खुद की बीमारी को ठीक नहीं कर सकता, जो व्यक्ति बीमारी से लाचार होकर अपना पद त्याग देता है उस व्यक्ति में चमत्कार की शक्ति होना पाखंड और ढोंग के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अपने आपको चंगा करने से उन्हें कौन रोक रहा था?

यह तो वही बात हो गई कि खुद निसंतान मर गए औरों को औलाद बख्स्ते हैं। ईसाई समाज को जो अपने आपको पढ़ा–लिखा समाज समझता है इस प्रकार के पाखंड में विश्वास रखता है यह बड़ी विडम्बना है। मदर टेरेसा, सिस्टर अल्फोंसो, पोप जॉन पॉल सभी अपने जीवन में गंभीर रूप से बीमार रहे। उन्हें चमत्कारी एवं संत घोषित करना केवल मात्र एक छलावा है, ढोंग है, पाखंड है, निर्धन हिंदुओं को ईसाई बनाने का एक सुनियोजित षड्यंत्र है। अगर प्रार्थना से सभी चंगे हो जाते तब तो किसी भी ईसाई देश में कोई भी अस्पताल नहीं होने चाहिए, कोई भी बीमारी हो जाए चर्च में जाकर प्रार्थना कर लीजिए। आप चंगे हो जाएँगे। खेद है कि गैर ईसाईयों को ऐसा बताने वाले ईसाई स्वयं अपना इलाज अस्पतालों में करवाते हैं। मेरा सभी हिन्दू भाइयों से अनुरोध है कि ईसाई समाज के इस कुत्सित तरीके की पोल खोलकर हिन्दू समाज की रक्षा करें और सबसे आवश्यक अगर किसी गरीब हिन्दू को ईलाज के लिए मदद की जरूरत हो उसका धन आदि से अवश्य सहयोग करें जिससे वह ईसाईयों के कुचक्र से बचा रहे।

शेष पृष्ठ 12 का | दलित समाज के शोषण का हथियार....

निवासी प्रमाण पत्र के नाम पर स्थाई निवासियों से ही भेदभाव नहीं कर रही बल्कि वह जाति के आधार पर भी भेदभाव कर रही है। जब पाकिस्तान बना था तो वहाँ की सरकार दलित हिन्दुओं को भारत आने से रोक रही थी। उसकी दलील थी कि इनके चले जाने से पाकिस्तान के नगरों में सफाई का काम कौन करेगा? तब बाबा साहिब आम्बेडकर ने दलित समाज के लोगों से अपील की थी कि वे किसी भी स्थिति में पाकिस्तान में न ठहरे और भारत आ जाएँ। उन्होंने तो यह भी कहा था कि उनमें से यदि कुछ को जबरदस्ती मुसलमान भी बना लिया गया है तो वे चिन्ता न करें और आ जाएँ, उन्हें स्वयं ही शुद्ध कर लिया जाएगा। बाबा साहिब ने पंडित जवाहर लाल नेहरु को भी पत्र लिखा था कि वे दलित समाज को पाकिस्तान से वापिस लाने की व्यवस्था करें क्योंकि दलित समाज केवल सफाई कर्मचारियों का काम करने के लिये नहीं है। अम्बेडकर तो क्या पता था कि उनके आँखें मूँदते ही, जवाहर लाल नेहरु के सक्रिय मार्गदर्शन में ही चलने वाली जम्मू कश्मीर सरकार बाल्मीकियों को धोखे से बुला कर दशकों के लिए केवल स्वीपर का ही काम करने के लिए बाध्य कर देगी। इन प्रकार के अन्यायों के खिलाफ जब कोई ऊँगली उठाता है तो उसके पेट में अनुच्छेद ३५ए की कटार राज्य सरकार घोंप देती है।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

दलित समाज के शोषण का हथियार अनुच्छेद ३५ ए

✍ डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

जम्मू कश्मीर के संविधान में धारा छह वहाँ के स्थाई निवासी को पारिभाषित करती है। भारत का वही नागरिक वहाँ का स्थाई निवासी बन सकता है जो या तो १६५४ में वहाँ का स्थाई निवासी हो या फिर उसके पूर्वज १६४४ से वहाँ रह रहे हैं और उनके पास राज्य में अचल सम्पत्ति हो। वहाँ का स्थाई निवासी ही राज्य में जमीन खरीद सकता है, नौकरी पा सकता है, शिक्षा संस्थानों में दाखिल हो सकता है, विधान सभा के लिए चुनाव लड़ सकता है या फिर उस चुनाव में मतदान कर सकता है। उससे भी बडी बात है कि जम्मू कश्मीर की कार्यपालिका ने ही भारत के संविधान में एक नया अनुच्छेद ३५ए डाल दिया है, जिसकी खबर भारतीय संसद को भी नहीं लगने दी। इस नए अनुच्छेद में यह व्यवस्था कर ली कि स्थाई निवासी को लेकर जम्मू कश्मीर सरकार जो भी कानून बनाएगी, चाहे वह संविधान के विपरीत ही क्यों न हो, उसे असंवैधानिक नहीं ठहराया जा सकेगा। सरकार का कहना था कि जम्मू कश्मीर खास राज्य है, इसलिए उससे सामान्य तरीके से व्यवहार नहीं किया जा सकता। खास क्यों है? क्योंकि यह मुस्लिम बहुल है। लेकिन यह पूरी घेराबन्दी करने पर जम्मू कश्मीर सरकार ने स्थाई निवासी की परिभाषा और अवधारणा का इस्तेमाल दलित समाज के शोषण व दमन के लिए शुरु किया। राज्य सरकार के सामने बड़ा प्रश्न था कि राज्य में शौचालयों और अन्य सफाई से जुड़े काम कौन करेगा? लेकिन इसका इलाज भी उसने सोच रखा था। जैसे ही १६५७ में जम्मू कश्मीर में नया संविधान लागू हुआ, राज्य सरकार ने पंजाब के बाल्मीकि समाज पर डेरे डालने शुरु कर दिए कि वे जम्मू कश्मीर में आएँ, वहाँ उनके लिए नौकरी और शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध हैं। बाल्मीकि समाज क्या, पंजाब का बच्चा बच्चा तब तक जान गया था कि राज्य में बेहतर अवसर तो क्या किसी भी नागरिक को उपलब्ध होने वाले सामान्य अधिकार भी उपलब्ध नहीं हैं। स्थाई निवासी का प्रमाण पत्र न होने कोई सारी उम्र जम्मू कश्मीर में गुजार दे, तब भी कोई अवसर उसके नजदीक नहीं फटकेगा। लेकिन राज्य सरकार को तो सफाई के लिए स्वीपर हर हालत में चाहिए थे। इसलिए उसे पंजाब के बाल्मीकि समाज को सब्ज बाग दिखाने थे। उसने पंजाब के दो सौ बाल्मीकि परिवारों को लालच दिया कि यदि वे रियासत में आकर सफाई से जुड़े काम करने के लिए तैयार हैं तो उन्हें राज्य के स्थाई निवासी का प्रमाण पत्र और अन्य सभी सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। राज्य सरकार स्वयं भी जानती थी कि यह काम वह राज्य के संविधान में बिना संशोधन किए नहीं कर सकती। लेकिन सरकार ने पंजाब के अनुसूचित जाति के बाल्मीकियों को धोखे से रियासत में बुला लिया। आश्चर्य है यह निर्णय भी वहाँ के मंत्रिमंडल ने लिया। इन बाल्मीकियों को स्वीपर के काम में लगा दिया गया। यह ठीक है कि उन्हें सरकार ने स्थाई निवासी के प्रमाण पत्र भी जारी कर दिए। लेकिन उन्हें स्थाई निवासी के जो प्रमाण पत्र जारी किए गए उन पर दर्ज कर दिया गया कि वे केवल स्वीपर के नाते काम करने के लिए ही योग्य होंगे। आज छह दशक बाद, जब उन परिवारों की संख्या भी बढ़ गई है, उनके बच्चे पढ़ लिख गए हैं लेकिन नौकरी के नाम पर वे केवल स्वीपर ही लग सकते हैं। वे राज्य में जमीन नहीं ले सकते और उनके बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए राज्य से बाहर जाना पड़ता है। यदि मान भी लिया जाए कि संविधान राज्य सरकार को स्थाई निवासियों के वर्ग बनाने का अधिकार देता है तो क्या राज्य सरकार को यह अधिकार भी देता है कि स्थाई निवासी का एक वर्ग केवल स्वीपर का काम ही कर सकता है? कोई भी सरकार, चाहे वह कितनी भी खास क्यों न हो यह कैसे कह सकती है कि उसके राज्य में बाल्मीकि समाज केवल स्वीपर का ही काम कर सकता है? चाहे वह कितना भी पढ़ जाए, लेकिन जम्मू कश्मीर सरकार उसे केवल स्वीपर के काम के योग्य ही समझती है। इसी का विरोध करते हुए तो बाबा साहिब भीमराव आम्बेडकर सारी आयु संघर्ष करते रहे। उन्होंने दलित समाज के लिए ही कुछ विशेष काम नियत किए गए हैं, लइसकोल भी स्वी[illegible] नहीं किया। आम्बेडकर का कहना था कि किसी भी व्यक्ति को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार काम चुनने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन जम्मू कश्मीर सरकार ने पंजाब के हजारों बाल्मीकियों को एक प्रकार से बन्धक बना रखा है और उन पर स्वीपर का काम बलपूर्वक लाद रही है। भारत के संविधान के अनुसार तो यह अपराध की श्रेणी में माना जाएगा। इसका अर्थ तो यह हुआ कि जम्मू कश्मीर सरकार स्थाई

शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

कीड़े मकोड़ों की तरह मौत, कब तक

सामाजिक सुरक्षा को किसी भी लोककल्याणकारी सरकार की प्राथमिकता सूची में अवश्य स्थान मिलना चाहिए। सामाजिक सुरक्षा यानी वे विशेष सरकारी योजनाएं जिनका प्रारंभिक लक्ष्य सभी परिवारों को कम–से–कम जीवन निर्वाह के साधन और शिक्षा तथा चिकित्सा की व्यवस्था करके दरिद्रता से मुक्ति दिलाना होता है। सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों में उचित स्वास्थ्य देखभाल, पेंशन, सामाजिक सहायता और बेरोजगारी भत्ते जैसी सुविधाएं शामिल होती हैं। विश्व के अनेक देशों में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों को सर्वोपरि रखा जाता है, ताकि जीवन स्तर कम से कम इतना ऊंचा हो कि इंसान गरिमा के साथ जिंदा रहे। कीड़े–मकोड़ों की तरह जीने और उन्हीं की तरह अकाल मौत मरने पर विवश न हो। विभिन्न देशों में सामाजिक सुरक्षा का स्तर बताने के लिए वैश्विक स्तर पर रिपोर्ट जारी होती है और कोई अचरज नहीं कि इस रिपोर्ट में भारत का स्थान काफी पीछे रहता है। वैसे भी ये बात कहीं दर्ज हो न हो, आम भारतीय तो देख ही रहा है कि भारत में सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त कदम नहीं उठाए जाते हैं। बल्कि ज्यादातर लोगों को इनके योग्य ही नहीं समझा जाता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी का यह बयान कि मुझे लगता है कहीं ऐसा न हो कि लोग अपने बच्चे दो साल के होते ही सरकार के भरोसे छोड़ दें। सरकार उनका पालन पोषण करे, इस बात को साफ–साफ दशार्ता है कि बहुमत के दम और दंभ भरने वाली सरकारें भी सामाजिक सुरक्षा के प्रति क्या नजरिया रखती हैं। जिस जनता के वोट से शक्तिमान बनकर वे शासन करने बैठे हैं, उसके स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, आवास जैसी मूलभूत सुविधाएं उसी के द्वारा दिए गए धन से उपलब्ध कराने में उन्हें कितनी तकलीफ हो रही है। इसका अनुमान ऐसे संवेदनहीन बयानों से लगाया जा सकता है। क्या गरीब मां–बाप अपने बच्चे को शौक से बीमार होते देखते हैं और सरकारी अस्पतालों में मर्जे के लिए भर्ती कराते हैं। गोरखपुर में केवल अगस्त माह में बीआरडी अस्पताल में २६० बच्चों की मौत हो गई। यह कोई छोटा–मोटा आंकड़ा नहीं है, सरकारी स्वास्थ्य सेवा की भयावह तस्वीर है। लेकिन सुविधाभोगी सरकार और समाज की संवेदनहीनता देखिए कि इन मौतों पर दर्द की कोई लहर ही नहीं उठ रही। गाय और उसके बछड़े की सेवा करने वाले, शेर और कुत्ते को प्यार से खिलाने–पिलाने वाले मुख्यमंत्री को क्या अपने राज्य में हो रही मासूमों की मौत पर इस तरह का बयान देना चाहिए था। संवेदनहीनता का एक दूसरा नमूना झारखंड में भी देखा गया है। रिम्स में इस साल कुल ४८५५ बच्चों को इलाज के लिए लाया गया। इनमें से ४१६५ बच्चे इलाज के बाद घर भेज दिए गए। सिर्फ ६६० बच्चों की मौत हुई। इनकी मौत की मुख्य वजह बर्थ एस्फेक्सिया, प्री मैच्योर डिलिवरी, सेप्सिस, बहुत कम वजन वाले बच्चों का जन्म आदि है। उन मां–बाप की हालत सोचें, जिनके बच्चे की मौत सिर्फ ६६० वाले आंकड़े में दर्ज होकर रह गई है। एक बार मान भी लिया कि बच्चों की मौत के एक नहीं कई अलग–अलग कारण थे। तो क्या कुपोषण, समय से पहले जन्म, बीमारियां इन सबसे निपटने और इनसे जनता की रक्षा करने की जिम्मेदारी लोक कल्याणकारी सरकार की नहीं है। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार ने ज़ो मोहल्ला क्लीनिक चलाने शुरू किए हैं, उससे गरीब जनता को काफी राहत मिली है, लेकिन अब यह योजना भी राजनीति का शिकार हो रही है। तो क्या भारत की गरीब जनता जुलाई में बारिश, अगस्त में बीमारी, दिसंबर में ठंड और मई में गर्मी और बाकी महीनों में तरह–तरह की दुर्घटनाओं से मरने को केवल इसलिए अभिशप्त रहेगी, क्योंकि वह सरकार भरोसे है और सरकार इस भरोसे का मान नहीं रख पा रही है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 20 सितम्बर से 26 सितम्बर 2017 तक

प्राप्तेष

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।